शिवोम् वाणी

अष्टम् खण्ड

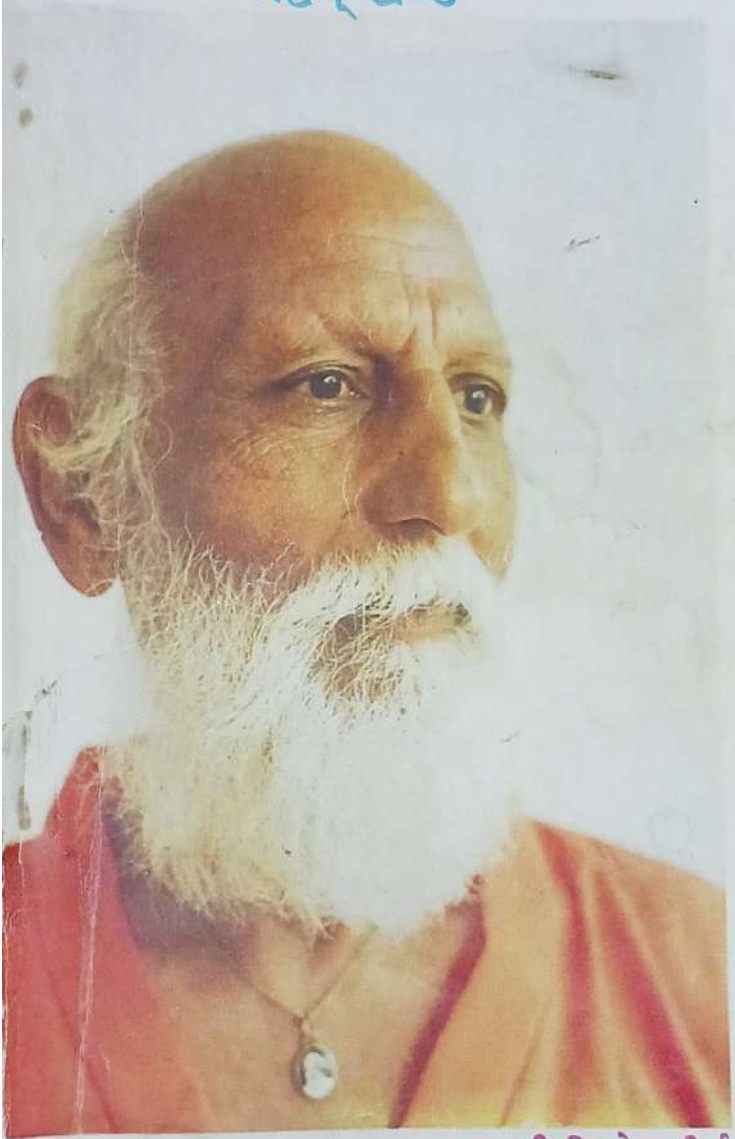

■ स्वामी शिवोम् तीर्थ

शिवोम् वाणी

अष्टम् खण्ड

■ स्वामी शिवोम् तीर्थ

शिवोम्-वाणी

(अष्टम-खण्ड)

प्रकाशक

श्री विष्णुतीर्थ साधना सेवा न्यास
१२/३ ओल्ड पलासिया, इन्दौर **(म.प्र.)**

प्रथम संस्करण

१५, **दिसंबर** १९९४

प्रति - ३०००

फोटो टाइप सेटिंग

स्टार कम्प्यूटर एण्ड ग्राफिक्स

४/१, नयापुरा इन्दौर

मुद्रक नवनीत प्रिंटर्स
१२७ देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर

४३२५००, ५३७८२४

मूल्य १०/- रुपये

दो शब्द

"शिवोम्-वाणी" का अष्टम-खण्ड साधक-पाठकों को इतनी शीघ्रता से उपलब्ध हो जावेगा इसकी कल्पना तक नहीं थी। सद्गुरु देव की कृपा से सभी के लाभार्थ यह अष्टम-खण्ड प्रस्तुत है। पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त शिवोम्-वाणी के संबंध में क्या कहा जा सकता है ? उनकी वाणी के रहस्य को समझ पाना हमारे बस की बात नहीं है। हमारे बस में यही है कि इस भजन-गंगा में गोता लगाकर अपने अंतस को निर्मल बनाते हुए गुरुकृपा हेतु भक्ति-मयी प्रार्थना करें। राजा भगीरथ द्वारा लायी हुई गंगा तो केवल पापों का ही हरण करती है, किन्तु पूज्य गुरुदेव के द्वारा की गई साधना (तपस्या) के फल स्वरूप हृदयाकाश से प्रस्फुटित भावों की गीत-गंगा साधकों के पाप, ताप व दैन्य का हरण कर प्रभु-भक्ति में निमग्न करने हेतु महान साधन है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है-

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्यों ऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यऽहम ॥9/28

अर्थ - मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, न कोई मेरा अप्रिय है और न प्रिय, परन्तु जो भक्त मुझको प्रेम से भजते हैं वे मुझमें हैं और मैं भी उनमे प्रकट हूँ । प्रभु के प्रत्यक्ष प्रगटिकरण का माध्यम प्रभु ने स्वयं प्रकट किया है। पूज्य गुरुदेव ने शिवोम्-वाणी को प्रकट करके प्रभु को भजने का मार्ग सुगम बना दिया है। भजनों के द्वारा साधक में सात्विक भावों का उदय होकर कर्तापन का भाव विगलित हो जाता है ।

साधक प्रभु के प्रेम में मग्न होकर अपने अहं का विसर्जन कर देता है। इस प्रकार साधक गुरुमुख हो जाता है ।

महाराज जी स्वयं कहते हैं -

" धन्य जीव जो गुरुमुख होवे

कि गुरु का ज्ञान धरे ह्रदय में, गुरु सेवा मे तत्पर होवे " ॥

एक अन्य भजन में भी कहा है-

"गुरु संगत जाके मन भावे

ताके ह्रदय राम की भगती, सहज प्रकट हो जावे" ।।

गुरु महाराज आगे कहते है-

"राम भजन से आनन्द उपजे, जनम मरण भय छूटे

आशा ममता दूर हटे सब, माया बांध है टूटे ॥

भजन में तो आनन्द घना है, मन शीतलता पावे ।

ज्यों - ज्यों मन विकार है जावे, मनवा सुख को लूटे ॥

अनेक रागों में प्रस्फुटित भजन-गंगा रूपी शिवोम्-वाणी का यह खण्ड भी साधकों को भजन करने की असीम प्रेरणा देकर गुरुमुख बनावेगा, इसमे संदेह नहीं ।

15 दिसम्बर 94

स्वामी आत्मबोध तीर्थ

श्री विष्णु तीर्थ साधना सेवा न्यास

ओल्ड पलासिया (जोबट कोठी)

इन्दौर (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

क्र.	भजन	पृष्ठ क्रमांक
1.	मुझको पता भी न लगा	१
2.	बादल गरज रहे हैं	१
3.	जब से शरण में आए	२
4.	मैं निर्लज्ज अजान बनी थी	२
5.	कौन उपाय करूँ मैं	३
6.	मन में आश प्रभु की जगी	३
7.	एक प्रभु का सकल पसारा	४
8.	मन फिसलता फिसलता फिसल ही गया	४
9.	सब्ज़ पत्ते रंग बदलने हैं लगे	६
10.	आ गया मैं आ गया	६
11.	वन में अकेली छोड़कर	७
12.	मन नहीं मेरा जगत में लागता	७
13.	हिरदय आँगन खोल के बैठी	८
14.	बैठे बैठे बात करते	८
15.	खा लिया जो था कि खाना	९
16.	क्यों भरमाया माया छाया	९
17.	मैं चला था खोजने भगवान को संसार में	१०
18.	पंछी उड़ा गगन मतवाला	११
19.	चाहे तारो चाहे मारो	११
20.	मेरे हृदय में आवो	१२
21.	पवन पुत्र सम सेवक नाहीं	१२
22.	जिस मकां से	१३
23.	पापी कुटिल कुपंथी जीवन	१३
24.	ऋतु वसंत में भी है मेरा	१४
25.	पगले! यह तूने क्या कीना	१४
26.	चोर तेरे घर में घुस आए	१५
27.	मैं बना हूँ निर्बल कैसा	१५

28. भवन तूने है बनाये क्या किया? १६
29. रास्ता लंबा बहुत है १६
30. सद्‌गुरूदेव मिले न जब तक १७
31. अब तो अंदर चलो रे भाई १७
32. मोहे उमंग पिया की लागी १८
33. मन्दिर दीपक बिन है सूना १८
34. रण-भूमि में वीर पुरुष ही १९
35. एक राम है, एक राम है १९
36. जोबन बीता पतझड़ जैसा २०
37. प्रेम की मूरत सद्‌गुरु देवा २०
38. जब कोई है नाहीं दूसर २१
39. यह दुनिया यह मौसम २१
40. आए जहाँ में टहलते टहलते २२
41. बुलाती हंसाती रिझाती है दुनिया २२
42. सजनी पीय बुलावा आया २३
43. साधन में साधक बढ़ आहिस्ता आहिस्ता २४
44. विनय करात हूँ जनम जनम से तव चरणों के माहीं २४
45. नीड त्याग अब हुआ सवेरा २५
46. कर इशारा निकल ही गया २५
47. जो जन धारे चरन कमल को प्रेम से हिरदय माहीं २६
48. आँख में शहतीर है पर वह नज़र आता नहीं २६
49. हमने माना था कि कुछ कर जाएँगे २७
50. साहिबा मेरया छोड़ तू क्यों गयो २८
51. द्वार खोल मैं खड़ी गली में २८
52. आयु के साथ साथ ही २९
53. सुन उमरिया बात मेरी २९
54. भटकत रहा शिवोम् जगत में ३०
55. मनवा क्यों आया इस देश ३०
56. चमन का नज़ारा ३१

57. काय करूँ मन लागत नाहीं ३१
58. इस अँधेरी रात में कुछ ३२
59. लागा रे लागा रे ३२
60. जगत में आया अकेला ३३
61. एक यही तो बात है ३३
62. तेरी मौज बिना हे प्रभुजी ३४
63. सद्‌गुरुदेवा सद्‌गुरूदेवा ३४
64. अल्प बुद्धि मैं सीमित मन हूँ ३५
65. रे मन ! उछलत काहे रह्या ३५
66. अब तक रहा समझता ३६
67. गई अनेकों बीट बहारें ३६
68. हे प्रभु आश लिए चरणों में आया हूँ तेरे ३७
69. चलते चलते.... ३७
70. जानकर आया जगत में ३८
71. आओगे कब को सैंया ३८
72. नाम रूप धन है सब धोका ३९
73. जा घट हो नाम उच्चारित ३९
74. धन्य वही जन हरि गुण गाये ४०
75. भव नदिया हरि पार कराए ४०
76. सिमरूँ हर दम नाम प्रभु का ४१
77. संत चरण नौ निधि विराजे ४१
78. मनवा राम बसे अन्तर में ४२
79. जनम मिला मानुष का तोहे ४२
80. धन्य जीव जो गुरु मुख होवे ४३
81. सत्य व्यौहार प्रभु का नाम ४३
82. यह जग जनम मरण की माया ४४
83. जिन्हां राम है प्यारा राम बसे मन के अन्दर ४४
84. मूरख माया मोह करत है ४५
85. हे प्रभु स्वामी दाता तुम हो ४५
86. जा पर कृपा करे गुरु मेरा ४६

87. गुरु संगत जा के मन भावे ४६
88. राम भजन से आनन्द उपजे ४७
89. मोहे अपने पास बुला लीजो ४७
90. जीव, क्यों तोहे समझ न आए ४८
91. दुर्लभ मानुष जनम है भाई ४८
92. गुरु देत है राम रतन धन ४९
93. क्या सितम तुमने किया ४९
94. लड़ता रहा मैं जूझता ५०
95. ब्रह्म अखण्ड का स्वामी प्रभुजी ५०
96. चिन्ता जाए प्रभु भजन से ५१
97. जा हरि चरण प्रीत मन नाहीं ५१
98. प्रभु प्रेम मतवाला मानव ५२
99. हम मलीन पापी दुख राशि ५२
100. धन जौवन मिथ्या सब जानो ५३
101. मन दर्पण तेरा है मैला ५३
102. भेद अभेद गया सब तेरा ५४
103. भटक भटक दुख पायो ५४
104. रात चांदनी छिटक मनोहर ५५
105. बंधु सहायक मित्र सब हैं बारी बारी चाल दिए ५५
106. संतों! समझ लेओ मन माहीं ५६
107. शरण पड़ी को राख लेओ प्रभु मोरे ५६
108. मोरी उमरिया बीतत जात रही ५७
109. सतिगुरु किरपा अजब निराली ५७
110. हे प्रभु! मन वाणी से दूर ५८
111. प्रभु तुम कारण जगत पसारा ५८
112. निद्रा तृष्णा छूटत नाहीं ५९
113. काया मोहित ऐसा मनवा ५९
114. कोई न लीला तेरी जाने ६०
115. कामना यही है मन में ६०
116. जब तक श्वासों में अहम बना ६१

117. देवासुर संग्राम देह में चलत निरन्तर हर पल ६१
118. राम भजन ही सुन्दरताई ६२
119. तेरा अन्तर मन है मैला ६२
120. मोहन मिलसी कौन गली ६३
121. गुरुजी अंतर दर्शन दीजो ६३
122. जा राम बिसार है जाता ६४
123. विनती सतिगुरु देव प्रभु से ६४
124. राम है अपरम्पारा ६५
125. राम भजन कर ६५
126. अन्तर गहरे जल में उतरत जाये ६६
127. राम ही मन में ६६
128. जो दिन निकला डूब गया वह ६७
129. सुख में बीता ६७
130. सद्गुरु देव कृपा भई ऐसी ६८
131. बातें करना काम जगत का ६८
132. देखते ही देखते ६९
133. मदारी कैसा खेल दिखाया ६९
134. तू जग में क्यों बौराया ७०
135. मनवा, जग में नाहीं लागे ७०
136. जीव को यह जग अनोखा ७१
137. माया जो कुछ करे सो कम है ७१
138. जगत प्रपंच में उलझी ऐसी ७२
139. मन भावन हरियाली छाई ७२
140. उड़ी पतंग गगन में ऊपर ७३
141. मनवा चलो पिया के देश ७३
142. मनवा क्यों तू पाप कमाए ७४
143. रात भयानक ७४
144. दूर देश जा बैठे प्रियतम ७५
145. तुममें लागा मनवा हरदम ७५
146. करत व्यवहार जगत के ७६

147. जीवन का क्या भरोसा ७६
148. वन पर्वत के दृश्य मनोहर ७७
149. राम जी! ७७
150. वासना! ७८
151. जाने का मौसम आ गया ७८
152. दिखाया प्रभु ने यह कैसा नज़ारा ७९
153. तन मन सब ही सूख गयो है ८०
154. छोड़े मुझे भव सागर माहीं ८०

(१)मुझको पता भी न लगा

१. मुझको पता भी न लगा, जीवन निकल गया ।
जीवन के साथ-साथ ही, दिन-दिन निकल गया ।
२. दुनिया में कल ही आया, ऐसा लगे मुझे।
पीछे जो मुड़ के देखा, जीवन निकल गया ॥
३. मलता रहा ही आँख को, विषयों में रत रहा।
आई जो अक्ल कुछ तो, जीवन निकल गया ॥
४. जग को मैं समझा अपना, पर था नहीं वह अपना ।
समझा जो सार जग का, जीवन निकल गया ॥
५. जीवन भी क्या तमाशा, पानी का बुलबुला है।
निकला न सांस बाहर, जीवन निकल गया ॥
६. तीरथ शिवोम् सोचे, यूं ही रहा उछलता ।
आँखें खुली जो देखा, जीवन निकल गया ॥

(२) बादल गरज रहे हैं

१. बादल गरज रहे हैं, बिजली चमक रही है।
मन में नहीं है बादल, फिर भी कड़क रही है ।।
२. पक्षी न कोई अन्दर, करता रहे जो कलरव ।
कोयल न कोई मन में, फिर भी चहक रही है ।।
३. सूरज वहां न कोई, फिर भी करे उजाला ।
है चांदनी नहीं तो, फिर भी छिटक रही है ।।
४. नाहीं समुद्र फैला, उठती हैं लहरे लेकिन ।
नदिया नहीं है कोई, फिर भी उफन रही है ।।
५.किरपा करे है सद्गुरु, जो दीन को उबारे ।
आती नजर नहीं वह, फिर भी महक रही है ॥
६. तीरथ शिवोम् किरपा, गुरुदेव है तुम्हारी ।
समझे न कोई समझे, फिर भी दमक रही है ॥

(३) जब से शरण में आए

१. जब से शरण में आए, दुख दूर सब हुए हैं।
किरिपा करी प्रभु ने, हम तो सुखी हुए हैं ॥
२. है शोक मन से भागा, है राग भी न कोई ।
ममता गई कहां है, गत रोग सब हुए हैं ॥
३. है गर्व हमने त्यागा, संतों की शरण पकड़ी।
जपते हैं नाम तेरा, आनन्द में हुए हैं ॥
४. मन में खुशी तरंगित, गम है न मन में कोई ।
गम से भी या खुशी से, बस दूर हम हुए है ॥
५. तुम ने कृपा से अपनी, पापी अनेक तारे ।
जग छोड़ कर पसारा, भव पार वह हुए हैं ॥
६. तीरथ शिवोम् पाया, अनुपम प्रसाद तेरा ।
अमृत प्रसाद पाकर उन्मुक्त जन हुए हैं ॥

(४) मैं निर्लज्ज अजान बनी थी

१. मैं निर्लज्ज अजान बनी थी, पर प्रभु किरपा कीनी ।
वर्षा दया की मेरे मन पर, खुशबू भीनी भीनी ॥
२. भटकन छोड़ प्रभु मन रमिया, मन थिरता पाई ।
मनवा तो आनन्द विराजे, चेतन गति है दीनी ॥
३. बनी अनाथ यतीम निरीहा, मारी मारी फिरती ।
५. प्रभु ने अपना हाथ बढ़ाया, अपनी ही कर लीनी ॥
४. अब तो प्रभु ही भावे मन को, जगत लोभ कछु नाहीं ।
अन्तर प्रभु विराजे आपे, किरपा ऐसी कीनी ॥
५.रक्षक वह है दीन जनों का, करत वही प्रतिपाला ।
उतरत पार है भव सागर वह, चरणों विनती कीनी ॥
६.तीर्थ शिवोम् बनी मैं क्या थी, तुम ने क्या कर दीना ।
कुलटा नीच कुकर्मी नारी, आप सरीखी कीनी ॥

(५) कौन उपाय करूं मैं

१. कौन उपाय करूं मैं जिससे, दुर्मति नाशे मेरी ।
राम चरण में नेहा लागे, प्रीति होय घनेरी ॥
२. माया मोहे भीग रहत हूं, ज्ञान ध्यान कछु नाहीं ।
वृथा जगत में उलझ रहत हूं, ऐसी गति है मेरी ॥
३. जानत हूं जग दुख का कारण, फिर भी जात भटक मैं ।
छूटं कैसे इस बंधन से, जगत वासना घेरी ॥
४. छूटत नाहीं है जग मो से, माया बीच पड़ी हूं।
आए कौन बचाए मोहे, दुखिया हूं बहुतेरी ॥
५. सद्‌गुरु देव कृपा जो होए, जग छुटकारा पाऊं ।
राम चरण से मिलना चाहूं, हूं तो वा की चेरी ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण गुरुदेवा, अन्तर करो उजाला ।
कपटी हूं पर जाना चाहूं, राम प्रभु की देहरी ॥

(६) मन में आश प्रभु की जागी

१. मन में आश प्रभु की जागी ।
सद्‌गुरु भेटे, मारग मिल्या, प्रीत-चरण चित्त लागी ॥
२. सद्‌गुरु देवा दीन दयाला, संत परम हितकारी ।
उंगली पकड़े, राह दिखाए, वीत-राग जग त्यागी ॥
३. गई निराशा, हुआ उजाला, चेतन भया प्रकाशित ।
अन्तर सतगुरु लीला दीखे, दुर्गति जात अभागी ॥
४. सार जगत का होवत परगट, अन्दर मन के माहीं ।
बढ़त विरह है राम चरण का, माया तृष्णा भागी ॥
५. जनम जनम के मन में बैठे, संचित कर्म अनेकों ।
तपने लागे, जलने लागे, जली विरह की आगी ॥
६. तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, कृपा अमोलक कीनी ।
भटकी को तुम राह लगाया, जगत रही मन पागी ॥

(७) एक प्रभु का सकल पसारा

१. एक प्रभु का सकल पसारा।
पालक वही बना है जग का, आप बना संसारा ॥
२. प्रभु बनाए, प्रभु बिगाड़े, धारण करत वही है।
नदी पहाड़ समुद्र बनाए, प्रभु का ही व्यौहारा ॥
३. चमकाए बरसाए वो ही, वह ही जग भरमाए।
बंधन मुक्त कराए प्रभु ही, ज्ञान करे चमकारा ॥
४. लीला उसकी जाने कोए, जा पर किरपा होए।
नहीं तो जग में उलझा ऐसा, पड़ा रहे अंधयारा ॥
५. मैं तू सारा खेल प्रभु का, तड़पे जीव बेचारा।
लेत समेट जगत को सन्मुख, होत सकल उजियारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, भेद न कोई जाने।
जाने भी तो कैसे जाने, जब तक रहे अंधारा ॥

(८) मन फिसलता फिसलता फिसल ही गया

१. मन फिसलता फिसलता फिसल ही गया,
भोग देखे जो जग के मचल ही गया।
रोके रुकता नहीं जब रहे फिसलता,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ॥
२. जग जो देखा, लुभाना बहुत दीखता,
सार समझे न कोई, नहीं सीखता।
चीखते चीखते रह गया चीखता,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ।।
३. मैं तो आया जगत में बनाने लिए,
बनाने लिए कुछ कमाने लिए।
न बनाया ही कुछ न कमाया यहां,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ॥
४. कामनाएं भी बैठी मेरे मन में हैं,
वासनाएं भी रहती मेरे मन में है।

कामनाओं में उलझा रहा मैं यहीं,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ।
५. मार खाते खिलाते समय कट गया,
यू हीं खपते खपाते समय कट गया।
सबसे लड़ते लड़ाते समय कट गया,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ॥
६. याद मुझको न आई प्रभु की कभी,
न ही सेवा कमाई प्रभु की कभी ।
न ही दुनिया ही जानी प्रभु की कभी,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ॥
७. अन्त वेला जो आया लगा तड़पने,
लौट आए समय मैं लगा तरसने ।
पर निकलता समय जो निकल ही गया,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ॥
८. हो गया जो कि होना था जीवन में
आ कर लिया जो कि जीवन में करना था आ ।
बिन हुए कुछ किए वह निकल ही गया,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ॥
९. अब तो वेला जो जाने का है सामने,
उस की चिन्ता करो जो कि कुछ सामने ।
जैसे बीता सो बीता निकल ही गया,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ॥
१०. अब रहे किरपा तेरी कि शिव ओम् पर,
नजर तेरी प्रभु हो कि शिव ओम् पर ।
पुण्य कोई नहीं पाप ही रत् रहा,
सारा जीवन तो ऐसे निकल ही गया ॥

(९) सब्ज पत्ते रंग बदलने हैं लगे

१. सब्ज़ पत्ते रंग बदलने हैं लगे।
छोड़ कर अपने पराए, मुंह छुपाने हैं लगे ॥
२. साथ देता दैव जब तक, मित्र अपने हैं सभी ।
अब समय अपना जो बदला, सब बदल जाने लगे ॥
३. है बना संसार ऐसा, कोई अपना है नहीं ।
जब समय मुश्किल का आया, मुंह चिढ़ाने सब लगे ॥
४. यह समझ पाए न मानव, मित्र शत्रु कौन है।
था लिया जिनका सहारा, वह हवा देने लगे ॥
५. हे प्रभु तू ही है अपना, तू करे प्रतिपाल है।
तेरा पकड़े जो सहारा, खिलखिलाने वह लगे ॥
६. शिव ओम् आया शरण तेरी, हाथ सिर मेरे रहे।
जगत बंधन से मैं छूटूं, तेरे चरणों मन लगे ॥

(१०) आ गया मैं आ गया

१. आ गया मैं आ गया, सागर किनारे आ गया।
कैसे उतरूँ पार मैं, सागर किनारे आ गया ।।
२. गहर है गम्भीर है, दूजी तरफ न दीखता ।
कुछ समझ पाऊं न मैं, है मन मेरा घबरा गया ॥
३. अपनी तरफ हूं देखता, गहराई सागर ना पता ।
कुछ भी तो है ताकत नहीं, मन में हूं मैं अकुला गया ॥
४. उतरने वाले हैं उतरे, पार सागर किस तरह ।
किस से जा पूछूं उपाय, पूछता शरमा गया ॥
मैं खड़ा सागर किनारे, मैं खड़ा ही हूं खड़ा।
कोई पूछे तो बताऊं, क्यों यहां मैं आ गया ॥
६. तड़पता पछता रहा हूं, मन में हूं मैं सोचता ।
रह गया सागर किनारे, क्यों यहां मैं आ गया ।
७.अब तो ऐ शिव ओम् दूजा, रास्ता बाकी नहीं ।
अब नहीं जाना है वापिस, आ गया सो आ गया ।।

(११) वन में अकेली छोड़कर

१. वन में अकेली छोड़कर, पार तुम कैसे गए।
तरस आया मन में न, बन हवा जैसे गए ॥
२. मैं अकेली वन अंधेरा, फैल सन्नाटा रहा।
घिर रहे बादल घनेरे, हिरन से जैसे गए ॥
३. मुंह से निकले बोल न, आँखें मेरी पथरा गईं ।
तुझ को बुलाऊं मैं कहां, तुम छोड़कर क्यों कर गए ॥
४. वन जगत, विषयों का तम, मैं अकेली भटकती ।
आओ बालम टेर सुन, वापिस नहीं, तुम तो गए ॥
५. विषयों में जकड़ी जा रही, रक्षक कोई दीखे नहीं ।
मान जाओ आ भी जाओ, बीत रातें दिन गए ॥
६. शिव ओम् मैं पछता रही, वन में अकेली क्यों रही।
मैं अकेली रह गई, पर मेरे प्रियतम गए ॥

(१२) मन नहीं मेरा जगत में लागता

१. मन नहीं मेरा जगत में लागता ।
मैं कहाँ जाऊं, कि दुख ही भासता ॥
२. मन है तड़पे हर समय बिन राम के ।
हर नजारा है मुझे अब काटता ॥
३. उमर निकली जा रही, हर पल के साथ ।
उमर तो है काल जाता चाटता ॥
४. मैं रहा विषयों में ही तल्लीन था । .
सुख के पीछे ही रहा मैं भागता ॥
५अब अवस्था मन की है बदली हुई।
अब रहा विषयों से हर दम कांपता ॥
६. राम के दर्शन मिलेंगे कब मुझे ।
क्यों नहीं आनन्द वह यह बांटता ॥

(१३) हिरदय आंगन खोल के बैठी

१. हिरदय आंगन खोल के बैठी, आओ प्रियतम प्यारे ।
रात दिवस मैं पंथ निहारूं, आवत नहीं मुरारे ॥
२. ध्यान तुम्हारा सतत् निरन्तर, बना ही मन में रहता ।
रोऊं तड़पूं, आहें भरती, हिरदय जलत अंगारे ॥
३. आसन दियो बिछाय मैंने, भवन हृदय के माहीं ।
तुम बिन सूना आसन देखूं, होऊं अति दुखारे ॥
४. रस्ता भूल गए तुम प्यारे, याद हृदय न मेरा ।
सेज तुम्हारी यहीं बिछी है, गए किधर गिरधारे ॥
५. अब तो नयना सूख गए हैं, हिरदय भी कुम्हलाया ।
कब आवेंगे कृष्ण कन्हाई, बिछुड़े बिना विचारे ॥
६. तीर्थ शिवोम् मेरे बनवारी, दासी जनम जनम की।
तेरे बिन लागे न मनवा, तड़पत रैन दिहारे ॥

(१४) बैठे बैठे बात करते

१. बैठे बैठे बात करते, उम्र दी मैंने गंवा ।
जब समय चलने का आया, कर रहा उससे गिला ॥
२. उम्र भर तो याद न आया, कभी भी राम है।
हर घड़ी हर पल ही मैंने, मन दिया विषयों मिला ॥
३. व्यवहार घर परिवार में, रत मैं रहा ही था बना ।
याद आया घर न अगला, घर दिया अपना भुला ॥
४. अब भय लगे कर्मों से अपने, जो किए अच्छे बुरे ।
कुछ न सोचा समझा पहले, अब दिया मुझको हिला ॥
५. है गुजारी उम्र यू हीं, स्वप्न जग के देखते ।
अब यही मैं सोचता हूं, क्या मिला ? कुछ न मिला ॥
६. है पटकता सिर है अपना सोचता शिव ओम् है ।
क्या कमाया क्या गंवाया, सब गया कुछ न मिला ॥

(१५) खा लिया जो था कि खाना,

१. खा लिया जो था कि खाना, अब नहीं बाकी रहा।
कर लिया जो कुछ था करना, कुछ नहीं बाकी रहा ॥
२. अब तो जाने का समय है आ गया, है आ गया ।
वक्त सारा चुक गया है, कुछ नहीं बाकी रहा ।
३. अब नहीं समझाओ मुझको, समझ पाता मैं नहीं ।
समझने का वक्त अब तो, कुछ नहीं बाकी रहा ।
४. है दिया जीवन लुटा, जगत भोगों के लिए।
इन्द्रियां भी शिथिल हैं अब, कुछ नहीं बाकी रहा ।
५. न बनाया न कमाया, आ के मानुष देह में ।
देह भी अब जा रही है, कुछ नहीं बाकी रहा ॥
६. है रहा शिव ओम् अब, समझाए लोगों आपको ।
अब नहीं समझे तो समझो, कुछ नहीं बाकी रहा ॥

(१६) क्यों भरमाया माया छाया

१.क्यों भरमाया माया छाया, क्यों अटका है काया ।
सिमरन राम करे न काहे, जान कछु न पाया ॥
२. जगत बना दुखदाई है जो, मन को भ्रमित है करता ।
मृग तृष्णा की नाईं भटके, कुछ भी हाथ न आया ॥
३. भाग रहा तू छाया पीछे, बड़ी लुभानी दीखे ।
गिरते पड़ते देर न लागे, गिरा तो उठ न पाया ॥
४. आशा तृष्णा छोड़ जगत की, सिमरन नाम तू कर ले।
जिसने पाया कुछ भी अन्दर, भजन बिना न पाया ।।
५.जनम मरण का फंद है काटे, नाम है ऐसी औषध । .
गुरु कृपा से मिलत नाम है, जिन पाया तिन पाया ।।
६. तीर्थ शिवोम् राम भज मनवा, काहे मन भटकावे ।
विरथा जग में सुख को खोजे, शरण राम न आया ॥

(१७) मैं चला था खोजने भगवान को संसार में

१.मैं चला था खोजने भगवान को संसार में ।
देख अपना दिल ना पाया, सार न संसार में ॥

२. सार न संसार में हो, फिर मिले भगवान क्यों ।
देखता क्यों दिल नहीं है, भटकता संसार में ॥

३. संसरण जो करता रहे है, हर समय हर पल घड़ी।
रूप वह हर दम है बदले, गुण है यह संसार में ॥

४. रूप यह बदले अनेकों, और बदले नाम भी ।
इस लिए कुछ सार है, दीखे न इस संसार में ।।

५. कूट नित्य वह एक रस है, है प्रभु ऐसा बना ।
फिर भला क्योंकर दिखे, वह मायामय संसार में ॥

६. हट कर जो देखे है उसे, उस नाम रूप स्वरूप से ।
अन्तर में वह पा जाए है, पर वह नहीं संसार में ॥

७. अन्तर में दीखे जब प्रभु, तब दीखता बाहर भी है ।
अन्दर जो देखे न उसे, वह क्यों मिले संसार में ॥

८. शिव ओम् अन्दर देख तू, धोका प्रकट संसार है।
चेतन स्वरूपी है प्रभु, वह है न जड़ संसार में ।

(१८) पंछी उड़ा गगन मतवाला,

१. पंछी उड़ा गगन मतवाला, मुक्त विहार करे वह ।
पिंजरा छूटा बंधन टूटे, अनत आनन्द करे वह ।
२. सुन्दरता हर ओर है छाई, शोक मोह कछु नाहीं ।
न ही कुछ है लेना देना, माया पार तरे वह ॥
३. लम्बी पर थी कठिन चढ़ाई, गुरुकृपा से पूरी पाई ।
अब तो पहुंचा नील गगन में, चेतन रूप धरे वह ॥
४. संशय मन का दूर हुआ है, कर्तापन भी चूर हुआ है।
सुख से वह भरपूर हुआ है, ऊंच से ऊंच चढ़े वह ॥
५. कृपा भई जब सद्गुरु देवा, जन्म जन्म का पाया मेवा ।
फलीभूत गुरुवर की सेवा, अब न जगत पड़े वह ॥
६. तीर्थ शिवोम् हे पंछी जाओ, घर अपने आनन्द मनाओ ।
खुले किवार उड़ा वह पंछी, भव में नाहीं पड़े वह ।।

(१९) चाहे तारो, चाहे मारो

१. चाहे तारो, चाहे मारो, हम तो द्वार पड़े हैं।
तेरे हुए, तुम्हीं को पकड़ा, सन्मुख हुए खड़े हैं ।
२. हम पापी अज्ञानी कपटी, सार न तेरा जानें ।
जब तक कृपा नहीं है तेरी, हम तो रहे अड़े हैं ।
३. जगत टटोला, दर दर भटके, अन्त तेरे दर आए।
तुम सा तू है, तू ही तू है, भाव यह हुए पड़े हैं ।।
४. दुखी बहुत ही जीवन में हम, मनवा चंचल डोले ।
सकत नहीं समझाएं मनवा, दलदल हुए गड़े हैं ।
५. शरण तुम्हारी पकड़ी हमने, मन में आशा धारे ।
जा जन कृपा तुम्हारी होवे, जग में हुए बड़े हैं ।
६. तीर्थ शिवोम् शरण में आए, सुन लो विनय हमारी।
रोवत नयनां, हिरदय तड़पे, चरणी आन पड़े हैं ।

(२०) मेरे हृदय में आवो

१. मेरे हृदय में आवो, रस्ता तुम्हारा देखूं ।
धीरज बंधाओ, आओ, नयनां तुम्हें ही पेखूं ॥
२. हिरदय पड़ा है सूना, तेरे बिना हे प्रियतम ।
अब मान जाओ, आओ, हर दम तुम्हें ही देखूं ॥
३. पागल कहे जमाना, समझे न पीड़ा मेरी ।
पीड़ा मिटाओ, आओ, तुम बिन न कुछ भी देखूं ॥
४. तेरे बिना न मेरा, कोई भी मेरा अपना ।
अपना बनाओ, आओ, अपना तुम्हें ही देखूं ॥
५. जग की है वासनाएं, मन में हजारों बैठीं।
तृष्णा मिटाओ, आओ, तृष्णा तुम्हें ही देखूं ॥
६. शिव ओम् मैं खड़ी हूं, दर्शन को तरसती मैं।
दर्शन दिखाओ, आओ, हिरदय में तुमको देखूं ॥

(२१) पवन पुत्र सम सेवक नाहीं

१. पवन पुत्र सम सेवक नाहीं ।
सेवा करत अनूठी प्रभुजी, आपुन है कुछ नाहीं ॥
२. प्रेमी न मांगत प्रियतम सो, सब कुछ देत ही रहता।
मन तन धन सब अर्पण प्रियतम, भाव-प्रेम मन माहीं ॥
३. प्रेमी ही सच्चा है सेवक, प्रियतम भाव निभाता ।
मन का भाव न पूरा करता, स्वारथ है मन नाहीं ॥
४. मारुति जो कुछ भी हैं करते, सकल राम के ताईं ।
अपना तो बस राम भरोसा, राम बिना कछु नाहीं ॥
५. रामकाज है भक्तन तारन, हनुमान पूरा करते ।
पर यह सेवा राम की समझें, गर्व करत हैं नाहीं ॥
६. तीर्थ शिवोम् पवन पुत्र हे, मैं हूं शरण तिहारी ।
करो कृपा सेवा की मुझ पर और आश है नाहीं ॥

(२२) जिस मकां से

१. जिस मकां से निकलने के, रास्ते हों नौ भला ।
किस तरह महफूज़ है, तू चैन से बैठा है क्यों ॥
२. इस मकां में खिड़कियां ही खिड़कियां, हर सू बनी ।
फिर खटका है नहीं क्यों, फिकरें हिफाजत है न क्यों ॥
३. बन्द करता क्यों इन्हें न, बेफिकर क्यों सो रहा।
सामने खतरा है तेरे, फिकर करता है न क्यों ।
४. चोर आने को ही अब, सब लूट कर ले जाएंगे।
तू पड़ा गाफिल बना, तदबीर करता है न क्यों ॥
५.हूं रहा समझाए तुझको, सोच कर कुछ सोच कर ।
वक्त निकले जा रहा, करता तरदद है न क्यों ॥
६. शिव ओम् तो समझा रहा, समझाए के है जा रहा।
तू नहीं है समझता, समझे भला तू है न क्यों ॥

(२३) पापी कुटिल कुपंथी जीवन

१. पापी कुटिल कुपंथी जीवन, भरमाया है माया ।
सार असार की सार न जानी, रही भटकता काया ॥
२. जग के गुण अवगुण को देखूं ,अपने अवगुण नाहीं ।
मैं तो बनया पुतला अवगुण, दूर न हटती माया ॥
३. अब मैं द्वारे तेरे आया, सद्गुण एको नाहीं ।
एक भरोसा तेरा प्रभुजी, ता ते शरणी आया ॥
४. अगुण सगुण तेरा रूप अनन्ता, पारावार न कोई ।
कृपा बिना तेरी न कोई, सागर न तर पाया ॥
न देखो मेरे अवगुण प्रियतम, अपना विरद सम्भारो ।
जैसा कैसा हूं मैं तेरा, मन इन्द्रिन और काया ।।
तीर्थ शिवोम् हे प्यारे प्रभुजी, कृपाशील गुणवन्ता ।
तारो, पार उतारो मोहे, भव जल बहु गहराया ॥

(२४) ऋतु वसन्त में भी है मेरा

१.ऋतु वसन्त में भी है मेरा, हिरदय सूखा सूखा ।
हरियाली न पुष्प खिले न, दीखत रूखा रूखा ॥
२. विषय- लिप्त आसक्त बना है, पल पल रत् भोगों में ।
पेट कभी न उसका भरता, रहता भूखा भूखा ॥
३. प्रेम भाव है मन में नाहीं, मेरे तेरे डूबा।
रहे अकड़ता फिरता जग में, जल में सूखा सूखा ॥
४. राग द्वेष से भरा है मनवा, अन्तर तम है छाया ।
कुछ आनन्द नहीं सुख ता में, रहे वह रूखा रूखा ॥
५. तीर्थ शिवोम् हे सद्गुरु देवा, हरो अविद्या मोरी ।
नहीं तो जीवन सारा बीते, रहूंगा भूखा भूखा ॥

(२५) पगले! यह तू ने क्या कीना

१. पगले ! यह तू ने क्या कीना ।
सिरजन हार भुलाया मन सो, मिथ्या जग मन दीना ॥
२. मिथ्या तो मिथ्या ही जग है, सत्य तत्व न कोई ।
चेतन एक प्रसारित सब ही, ध्यान नहीं तू दीना ॥
३. जो जग दीखे सब है माया, मन का खेल है सारा ।
ता में जीव फिरे है भटका, मन ता में ही दीना ॥
४. रहा बिगाड़त जीवन को तू, उलझ रहा माया सों ।
झटक अविद्या, तत्व संभारे, अनत अपार प्रवीना ॥
५. यदि न तारे जीवन अपना, घूमे चक्र घनेरे ।
कटे फंद माया का तेरा, राम नाम मन दीना ॥
६. तीर्थ शिवोम् समझ रे पगले, मिले न बारम्बारा ।
सुखी होए आनन्द मनावे, सिमरन राम जो कीना ।

(२६) चोर तेरे घर में घुस आए

१. चोर तेरे घर में घुस आए, तू बेसुध है सोया ।
सन्त पुकार रहे समझाएं, जो सोया सो खोया ।।
२.रहा बिताए जीवन जग में, विषयन मांही उलझा ।
समझ न आई अब तक तोहे, कुछ भी नहीं तू बोया ॥
३. बोए नहीं तो काटेगा क्या, यह तो बात प्रकट है।
राम नाम का बीज अलौकिक, भक्तन के घर होया ।
४. समय बिगाड़त जो है अपना, वह पीछे पछतावे ।
मल मल के वह पोंछे आँसू, जी भर कर वह रोया ॥
५. जनम अमोलक तूने पाया, यह तो प्रभु कृपा है।
पर आसक्त बना विषयों में, काहे इसको खोया ।।
६. तीर्थ शिवोम् समझ मूरख, जीवन यह दुर्लभ है।
व्यर्थ गँवाया जिसने इसको, वही दुखी फिर होया ।।

(२७) मैं बना निर्बल हूं कैसा

१. मैं बना निर्बल हूं कैसा, कुछ भी कर सकता नहीं ।
मन बड़ा बलवान है मैं मन से लड़ सकता नहीं ॥
२. निकला था मैं साफ करने मन से कर्मों अपने ।
पर नहीं आसान निकला, मैं तो चल सकता नहीं ॥
३. यत्न कर कर के मैं हारा, मन मरा मेरा नहीं ।
वासनाएं छीन हैं न, कुछ भी बना सकता नहीं ॥
४. वासनाएं दनदनाती, बैठ मन मेरे में है।
मैं हटा पाया न इनको, मैं हटा सकता नहीं ॥
अब रहा धीरज न मुझमें, क्या करूँ ? कैसे करूं?
यह चढ़ाई है कठिन, कुछ भी तो चढ़ सकता नहीं ॥
६. है प्रभु शिव ओम् की है, लाज तुमरे हाथ में ।
तुम कृपा जब तक करो न, मैं तो कर सकता नहीं ॥

(२८) भवन तूने है बनाए क्या किया?

१. भवन तूने है बनाए क्या किया ? कुछ न किया।
मन को वश में कर न पाया, क्या किया ? कुछ न किया ॥
२. जगत में है यश कमाया, यह भी सब विरथा किया ।
जीत अपने को न पाया, क्या किया ? कुछ न किया ।।
३. सब यही रह जाएंगी, जो पुस्तकें लिखता रहा ।
मन की पुस्तक पढ़ न पाया क्या किया ? कुछ न किया ।।
४. गर्व दर्शाता रहा तू, बात कर कर ज्ञान की ।
५. ज्ञान अन्तर का न पाया, क्या किया ? कुछ न किया ।।
अब तड़पता रो रहा है, और पछताता फिरे ।
समझ कुछ भी तू न पाया, क्या किया ? कुछ न किया ॥
६.है हुआ शिव ओम् अब तो बीच चौराहे खड़ा।
व्यर्थ में निकला है जीवन क्या किया ? कुछ न किया ॥

(२९) रास्ता लम्बा बहुत है

१. रास्ता लम्बा बहुत है, वह तो कटता ही नहीं ।
वासनाएं मन लिए है, वह तो हटता ही नहीं ॥
२. कर्म ढेरों मन में संचित, वह निकलते हैं नहीं ।
एक भी न मन से निकलता, कोई कटता है नहीं ।।
३. वासनाओं का समुंदर मन में है फैला हुआ।
वह हटाए न हटत है, वह सिमटता ही नहीं ॥
४. क्या करूं मनवा यह मेरा, किस तरह निर्मल बने ।
गर्व मन में जम के बैठा, वह तो घटता ही नहीं ॥
५. यत्न कर कर के थका में, वासना मरती नहीं ।
कामनाओं का है पर्वत, वह तो छँटता ही नहीं ।
६. कुछ भी होने का नहीं है, बिन कृपा गुरुदेव के ।
यत्न कर शिव ओम् हारा, कुछ भी हटता ही नहीं ॥

(३०) सद्गुरु देव मिले न जब तक

१. सद्गुरु देव मिले न जब तक, दुखड़ा बहुत उठायो ।
मिले जभी तो मारग मिल्या, अन्तर राह दिखायो ।।
२. मन्दिर तीरथ रही भटकती, पन्ने रही पलटती ।
गुरु कृपा बिन कोई मानव, नहीं राह पर आयो ।
३. भटक रहा तू जग के माहीं, गुरु शरण न पकड़े।
मारग अन्तर गुरु दिखावे, अन्तर चेतन पायो ।।
४. गुरु कृपा से, किरिपा शक्ति, लीला अजब दिखावे ।
गुरु कृपा सीमाएं टूटी, अनंत अपार बनायो ।।
५. धन्य भाग जो सद्गुरु पाए, दुविधा नाठी मन सों ।
शोक मोह माया भ्रम नाशे, जीवन सफल करायो ॥
६. तीर्थ शिवोम् हे सद्गुरु प्यारे, यह उपकार है कीना ।
क्या से क्या कर दीना मोहे, पाथर स्वर्ण बनायो ॥

(३१) अब तो अन्दर चलो रे भाई

१. अब तो अन्दर चलो रे भाई, अन्दर ओर चलो ।
अन्दर सुख है अन्दर चेतन, अन्दर गति करो ॥
२. कब तक भटके बाहर मनवा, बाहर है सुख नाहीं ।
अन्दर ही सर्वत्र विराजे, अन्दर ध्यान धरो ॥
३. मुक्ति अन्दर गए बिना न, न ही ज्ञान अनन्ता ।
अन्दर मारग परमारथ का, अन्दर जाए तरो ॥
४. अन्दर जाना कठिन बहुत है, इस बिन बात बने न ।
अन्तर्मुखी है इन्द्रिन नाहीं, अन्दर ताही करो ।।
अन्दर गति पलट जब जाए, अनुभव दिव्य अनेकों ।
पाप कटें, मन शीतल होए, अन्तर ताप हरो ।।
६. तीर्थ शिवोम् सुनो हे भाई, एक ही अन्तर मारग ।
भ्रम नाशे, सब दुविधा भागे, होय जात खरो ॥

(३२) मोहे उमंग पिया की लागी

१. मोहे उमंग पिया की लागी, अन्तर पीड़ा जागी ।
रहत पिया ही ताकत झांकत और वासना भागी ॥
२. जीय जले दिन राती मोरा, चैन है पल भर नाहीं ।
रोवत आहें भरत निरन्तर, विरह अगन है लागी ॥
३. अब तो जगत विलीन हुआ है, दृश्य न दीखे कोई ।
मन उन्मुक्त भया है ऐसा, सुन्न समाधि लागी ॥
४. प्रेम भरा हिरदय में अन्तर, छलकत छलकत जाए ।
आशा तृष्णा दूर हुए सब, माया ममता भागी ॥
५. तीर्थ शिवोम् हे प्रियतम आओ, हिरदय प्यास बुझाओ ।
अब तो मनुआ आकुल व्याकुल, प्रभु प्रेम की आगी ॥

(३३) मन्दिर दीपक बिन है सूना

१. मन्दिर दीपक बिन है सूना ।
दीपक तो मन्दिर में ही है, फिर भी सूना सूना ॥
२. दीपक है, पर नहीं प्रकाशित, पड़ा है परदा माया ।
ता ते तम है छाया अन्दर, अन्दर है सब सूना ॥
३. दीपक तम है एक साथ ही, रहते मन मन्दिर में ।
दीपक दिखे न दीखे तम ही, ता ही मन्दिर सूना ॥
४. कौन जलावे दीपक मोरा, कौन भगावे तम को ।
कौन करे उजियारा अन्दर, पड़ा जो अब तक सूना ॥
५. सद्गुरुदेव बिना न कोई, दीप जलावन हारा।
वह ही बेड़ा पार लंघावे, जाए मन का सूना ॥
६. तीर्थ शिवोम् विनय कर जोड़े, किरपा सतगुरु राखो ।
अंधकारमय तम से जीवन हटे, यह सूना सूना ॥

(३४) रण-भूमि में वीर पुरुष ही,

१. रण-भूमि में वीर पुरुष ही, सकत है उतरत आए ।
वीर पुरुष ही साधन करता, राम भजन मन लाए ॥
२. गिरता पड़ता उठता चलता, आगे जात बढ़त है।
साहस कभी न छोड़े मन का, साहस पार कराए ॥
३. जो रण में न उतरे कबहुँ, वह क्या गिरना जाने ।
जो गिर के न जाने उठना, गिरा पड़ा रह जाए ॥
४. राम भजन में वीर पुरुष जो, छोड़े गर्व है मन का ।
सीस उतार धरे भुईं ऊपर, माया पार कराए ॥
५.जग की बाधा कोई भी तो, मारग रोक सके न ।
चलता जाए बढ़ता जाए, पार वह नदिया जाए ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो हे साधक, मन में धीरज राखो
चलते रहो भजन में आगे, सद्गुरु पार लंघाए ॥।

(३५) एक राम है, एक राम है

१. एक राम है, एक राम है, एक राम है मेरा ।
दूजा नाहीं, दूजा नाहीं, दूजा नाहीं मेरा ॥।
२. घर परिवार संकल मैं त्यागा, त्यागा सभी व्यौहारा ।
एक ही राम भरोसा पकड़ा, दूजा नाहीं मेरा ॥।
३. जग में रहूं, जगत में नाहीं, जग में जग से न्यारी ।
जग में एक राम ही देखा, दूजा नाहीं मेरा ॥
४. संत कहें, समझाएं जन को, केवल राम तुम्हारा ।
सीख संत पकड़ी है मैंने, दूजा नाहीं मेरा ॥।
५.जो होए सो होए अब तो, एक ही राम सहारा ।
तीर्थ शिवोम् राम बिन कोई, दूजा नाहीं मेरा ॥

(३६) जोबन बीता पतझड़ जैसा,

१जोबन बीता पतझड़ जैसा, बिना मिलन ही निकला।
देखत देखत सोचत सोचत, आंख झपकते निकला ॥
२. रही संवारत गर्व करत मैं, मिथ्या जोबन ताईं ।
वह तो धोका दे गया मुझको, धोकेबाज ही निकला ।।
३. पिया मिले न, आए सन्मुख, न संदेश ही भेजा।
मैं तो रह गई राह निहारत, समय वृथा ही निकला ॥
४. जोबन था पर होश नहीं था, कैसे मिलन मैं पाती ।
ता ते जोबन विरथा निकला, विरथा जीवन निकला ॥
५.मैं तो रह गई भरत ही आहें, पीय रिझा न पाई ।
प्रेम उदय न मेरे मनवा, प्रेम दिखावा निकला ॥
६. तीर्थ शिवोम् खड़ी दोराहे, प्रियतम मेरा आवे ।
प्रियतम तो पर नाहीं आया, जीवन यूहीं निकला ॥

(३७) प्रेम की मूरत सद्गुरु देवा

१.प्रेम की मूरत सद्गुरु देवा ।
ज्ञान-सिंधु है गहर गम्भीरा, डोलत नाहीं सद्गुरु देवा ।।
२.शोक मोह से नित्य अछूता गर्व तनिक भी नाहीं ।
माया ममता मोह नहीं है, नित्य निरन्तर सद्गुरु देवा ।।
३. मिलन करावे दीन जनों को, प्रभु प्रियतम के ताईं ।
साधन उसका सहज अनूठा, अद्भुत मेरे सद्गुरु देवा ॥
४. दीन-हीन हम बालक तेरे, करो कृपा तुम ओर निहारे ।
कृपा शील तुम दयावन्त हो, करो अनुग्रह सद्गुरु देवा ॥
५. मन में दोष अनेकों हमरे, पर तुम दोष न देखो हमरे ।
तुम तो कृपा अहैतुक करते, कृपा स्वरूपा सद्गुरु देवा ॥
६. तीर्थ शिवोम् तुम्हारे चरणी, हम बालक हैं मूढ़ अजाने ।
राखो लाज हमारी प्रभुजी, शरण में आए सद्गुरु देवा ।।

(३८) जब कोई है नाहीं दूसर

१.जब कोई है नाहीं दूसर, सेज पिया मैं सोई ।
मैं और मेरा साजन प्रियतम, प्रेम पाश में खोई ॥।
२. मन विकार तरंगित नाहीं, जगत विलीन भया है ।
सुख ऐसे की उपमा नाही, सुख अनुपम में खोई ॥
३. मैं प्रियतम में, प्रियतम मुझमें, सिमटत जात निरन्तर ।
दो को छोड़ हुए एको ही, दुविधा मन की खोई ॥
४. अनंद बिना अनुभव न दूजा, अन्तर ज्ञान भी भागा ।
आनन्द सागर डूब रही मैं, अनंद रूप मैं होई ॥
५.प्रियतम ही प्रियतम सब दीखे, मैं तू भेद मिटा है।
मैं तो हुआ विलीन पिया में, मैं अब रहा न कोई ॥
६. तीर्थ शिवोम् हे प्यारे प्रियतम, रखियो गले लगाए ।
भव का बंधन छूट गयो है, मैं तो प्रियतम होई ॥

(३९) यह दुनिया यह मौसम

१. यह दुनिया यह मौसम, गजब के नज़ारे ।
कि मन मोहते हैं, हमारे तुम्हारे ॥
२. यह सूरत यह शकलें, यह नदिया किनारे ।
करें मन तरंगित, हमारे तुम्हारे ।।
३. यह माया है छाया, प्रभु ने भुलाया ।
करे मन है व्याकुल, हमारे तुम्हारे ॥
४. जो देखें यह दुनिया, जो सोचें नज़ारे ।
करे मन को चंचल, हमारे तुम्हारे ॥।
५.न देखो यह दुनिया, तो दुनिया बुलाती ।
घुमाती है मन को, हमारे तुम्हारे ॥
६. है शिव ओम् देखे, यह माया प्रभु की।
उछाले है मन को, हमारे तुम्हारे ।।

(४०) आए जहां में टहलते टलहते

१. आए जहां में टहलते टहलते ।
हैं उलझे यहीं पर टहलते टहलते ॥
२. किधर को है जाना, कहां को है मंजिल ।
गए भूल सब ही, टहलते टहलते ॥
३. यह माया जहां की, अजब है निराली ।
वह लेती फंसा है, टहलते टहलते ॥
४. न छोड़े यह छूटे, हटाए हटे न ।
है लग जाती पीछे, टहलते टहलते ॥
५. समझ में न आए, करूं क्या मैं इसका ।
निकल जाऊं कैसे, टहलते टहलते ।।
६. ऐ शिव ओम् आया, है क्यों तू जहां में।
गया चैन मन का, टहलते टहलते ॥

(४१) बुलाती हंसाती रिझाती है दुनिया

१. बुलाती हंसाती रिझाती है दुनिया,
बुला जाल में फिर फसाती है दुनिया ।
खिलाए पिलाए नचाए है दुनिया,
मगर फिर तो यह कि रुलाती है दुनिया ॥
२. नहीं जो है होता कराती है दुनिया,
नहीं जो दिखे है, दिखाती है दुनिया ।
नहीं मानता जो मनाती है दुनिया,
असम्भव को सम्भव बनाती है दुनिया ।।
३. मरी कामनाएं जगाती है दुनिया,
जगा कर उन्हें फिर बिठाती है दुनिया ।
सुखी घर भी उजड़े बनाती है दुनिया,
बनाती उठाती गिराती है दुनिया ॥

४. नहीं कुछ करो तो भी छेड़े है दुनिया,
निकल भाग जाओ तो घेरे है दुनिया ।
जो लड़ना न चाहे लड़ाती है दुनिया,
५.लड़ाती फसाती भगाती है दुनिया ॥
नहीं बक्शती कोई कितना बड़ा हो,
नहीं छोड़ती चाहे कितना दुखी हो ।
नहीं देखती है विवशता किसी की,
तमाशे ही करती कराती है दुनिया ॥
६. नमस्कार करता है शिव ओम् तुझको,
रहे किरपा तेरी न हो ताप मुझको।
रहे सुख से दुनिया में सब जीव मानव,
नहीं अग्न में यह तपाए है दुनिया ॥

(४२) सजनी पीय बुलावा आया

१. सजनी पीय बुलावा आया ।
छोड़ जगत के झगड़े टंटे, ममता मोह और माया ।।
२. पीय बुलावत जात नहीं तू, कैसी मति है तेरी ।
बारम्बार यह अवसर नाहीं, जग त्यागा तिन पाया ॥
३. काहे सोय रही जग माहीं, चार घड़ी का मेला ।
साचा सुख है प्रियतम के घर, जिन पाया मन भाया ॥
४. बाहर डोली राह निहारे, उठ शिंगार तू कर ले।
त्रिगुन त्याग होजा मन निर्मल, प्रियतम यही है भाया ॥-
५. मैं थाकी समझावत तोहे, निद्रा त्यागत नाहीं ।
यह वेला है सोवन नाहीं, सोया नहीं है पाया ।
६. तीर्थ शिवोम् सुनो हे सजनी, पीय बुलावत तोहे ।
उदय तेरा सौभाग हुआ है, चल तेरे घर आया ।

(४३) साधन में साधक बढ़ आगे आहिस्ता आहिस्ता

१. साधन में साधक बढ़ आगे आहिस्ता आहिस्ता ।
साधन मांगे मन का धीरज, आहिस्ता आहिस्ता ॥
२. साधन करना बहुत कठिन है, गिरने का डर रहता ।
धीरे धीरे कदम उठाना, आहिस्ता आहिस्ता ।।
३. जिसके मन में धीरज नाहीं, फल को जल्दी चाहे ।
फलदाता एको परमेश्वर आहिस्ता आहिस्ता ।।
४. मूल मंत्र यह साधन का है, धीरज मन में राखो ।
साधन तो कर नित्य निरन्तर, आहिस्ता आहिस्ता ।।
५. लुढ़क गए यूं कितने साधक, कर कर जतन अनेकों ।
पर धीरज मन में न धारा, आहिस्ता आहिस्ता ।।
६. तीर्थ शिवोम् सुनो हे साधक, साधन पास है तेरे ।
हौले-हौले, धीरे-धीरे, आहिस्ता आहिस्ता ॥

(४४) विनय करत हूं जनम जनम से तव चरणों के माहीं

१. विनय करत हूं जनम जनम से तव चरणों के माहीं ।
बनी हूं दीन महा दुखियारी, सुनत तू काहे नाहीं ॥
२. रूप न मैंने कोई छोड़ा, जनम अनेकों धारे।
रूप रूप में विनय गुजारी, सुनत तू काहे नाहीं ॥
३. चलते चलते चली गई मैं, पहुंच न पाई मंजिल ।
कब तक चलन होगा मेरा, सुनत तू काहे नाहीं ॥
४.अब तो चला न जाए मो सो, मैं चलते थक हारी ।
कब छुटकारा पाऊं इस से, सुनत तू काहे नाहीं ॥
अब तो टेर सुनो प्रभु मोरी, करत विनय हूं तो से ।
दुखियारी की लाज संभारो, सुनत तू काहे नाहीं ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण में आई, कर बद्ध माथा टेके
मैं तो कुटिल कुचाली पापिन सुनत तू काहे नाहीं ॥

(४५) नींद त्याग अब हुआ सवेरा

१.नींद त्याग अब हुआ सवेरा, क्यों तू पड़ा है निद्रा घेरा ।.
अब तो चलो बटोही घर को, नगरी टूटी लुट गया डेरा ॥
२. सोते जीवन दिया लुटाए, लाभ न सोचा न ही हानि ।
बीत गया सारा ही ऐसे, जैसे कोई पाए फेरा ॥
३. राग द्वेष में लगा रहा तू, समझा कीमत तन की न तू ।
दिया गंवाय विषयन इसको, काम न आए मेरा तेरा ॥
४. अपना शत्रु आप बना तू, समझा कुछ न राम भजन को ।
अब तो गई निकल है बेला, बना अभी तू जग का चेरा ॥
५. अभी नहीं है बिगड़ा कुछ भी, अब भी चेत करो रे भाई ।
अब भी राम भजन मन राखो, राम ही करत निवेरा ॥
६. तीर्थ शिवोम् मैं क्या समझाऊं, जीवन बहुत ही छोटा ।
सोचत सोचत दियो बिताए, पड़ा रहा तू बीच अंधेरा ॥

(४६) कर इशारा निकल ही गया,

१. कर इशारा निकल ही गया, न वह ठहरा, निकल ही गया।
आया बीता निकल ही गया, मेरा जीवन निकल ही गया ॥
२.कुछ न पूछा निकल ही गया, न कहा भी, निकल ही गया।
न सुना कुछ, निकल ही गया, मेरा जीवन निकल ही गया ॥
३. संभल पाया न मैं भी जरा, न बिठा पाया उसको जरा ।
न ही आदर दिखाया जरा, मेरा जीवन निकल ही गया ।.
४. वह तो आ के चला जाए है, न वह ठहरे चला जाए है ।
उसने पूछा कहा न सुना, मेरा जीवन निकल ही गया ।।
५. उसको खोजूं मैं जाय कहां, उसको पाऊं मैं जाय कहां ।
वह गया तो गया है कहां, मेरा जीवन निकल ही गया ।
६. है यह शिव ओम् रोता खड़ा, उसको जाते है देखे खड़ा।
पर गया, सो गया, सो गया, मेरा जीवन निकल ही गया।

(४७) जो जन धारे चरन कमल को प्रेम से हिरदय माहीं

१. जो जन धारे चरन कमल को प्रेम से हिरदय माहीं ।
आनन्द पावे अजब अलौकिक, दुख कोई भी नाहीं ॥
२. राम चरण अनहद सुखदाई, ध्यान धरें जन उतरें ।
अजब अनोखी महिमा उनकी, पारावार है नाहीं ॥
३. चरण कमल इक नाव बनी है, सागर पार लंघावे ।
न इसमें श्रम, नाहीं संकट, दुविधा कोई नाहीं ॥।
४.चरण कमल ऐसी है औषघ, हरत रोग भव जो ।
मन निर्मलता भाव हृदय है, माया भ्रम को नाहीं ॥
५. तीर्थ शिवोम् चरण धारे, हिरदय शीतलता है।
गुरु कृपा का फल है पाया, किरपा सम को नाहीं ॥

(४८) आँख में शहतीर है पर वह नजर आता नहीं

१. आँख में शहतीर है पर वह नजर आता नहीं ।
जीव है अवगुण भरा, पर जान वह पाता नहीं ॥
२. गलतियां पग पग करे, करता चला ही जाए है ।
पुतला बना भूलों का वह, पर जान वह पाता नहीं ।
३. दूसरों के दोष देखें, उनमें चाहे हो न हों।
दोष अपने दीखते न, जान वह पाता नहीं ॥
४. दोष अपने जो वह देखे, तो बुरा सब से बड़ा ।
पर यही मुश्किल है सबसे, जान वह पाता नहीं ॥
५.जो न दीखे दोष अपने, मन से निकले हैं नहीं ।
दोष जब तक ज्ञान अन्तर, जान वह पाता नहीं ॥
६. हे प्रभु मुझको बचा, शिव ओम् करता यह विनय ।
तुम तो अन्तर में बसे हो, जान वह पाता नहीं ॥

(४९) हमने माना था कि कुछ कर जाएंगे,

१. हमने माना था कि कुछ कर जाएंगे,
हम ने समझा था प्रभु पा जाएंगे।
पर यह इच्छा तो अधूरी रह गई,
जिन्दगी तो बस यूंही ही ढह गई ।।
२.नाहीं कर पाए जगत में आ के कुछ,
न बना पाए जगत में आ के कुछ ।
अब कि यह मन मलिन हम हैं जा रहे,
मन की इच्छा तो यू ही ही रह गई ॥
३. दिन मिले थे चार हमको जिन्दगी,
पर गुजारे मन में आशाएं लिए।
कुछ निकाले हमने रस्ता देखते,
जिन्दगी तो बस यूंही ही बह गई ॥
४. जिन्दगी रुकती नहीं है इक घड़ी,
वह न देती है कि महलत इक घड़ी ।
वह चली जाती है मुंह को फेर कर,
तुम भी जाओ अब यह जाती कह गई ।
५.बेसहारा मैं खड़ा बाजार में,
पर मुझे कोई नहीं है पूछता ।
यह ही फल पाया है मैंने जिन्दगी,
जिन्दगी आई न आई ढह गई ।
६. अब पटकता सिर रहा शिव ओम् है,
अब कहाँ जाए कोई मन्जिल नहीं ।
रो रहा बेदर बना बेघर बना,
बुल बुला पानी का बन कर रह गई ।

(५०) साहिबा मेरया छोड़ क्यों तू गयो

१. साहिबा मेरया छोड़ क्यों तू गयो ।
राह तेरा देखूं, भूल क्यों तू गयो ।।
२ जिन्दगी रुत वसंत आई, उपवन फूल खिले ।
देखूं पर न तोहे, दूर हटा क्यों गयो ॥
३. मैं हूं दासी तेरी, नाम जपूं मैं तेरा ।
तरस नहीं तोहे, तोड़ मन क्यों गयो ।
४. चरण पड़ूं तेरे, वापिस आ सजना ।
तड़प रही हूं मैं, तड़पा क्यों तू गयो ॥
५. हाथ तेरा पकड़ा, झटक दिया तूने।
यह क्या किया तूने, हाथ छुड़ा क्यों गयो ।।
६. तीर्थ शिवोम् रही, राह तेरा देखूं ।
आ मिल आ सजना, मोड़ मुंह क्यों गयो ।।

(५१) द्वार खोल मैं खड़ी गली में,

१. द्वार खोल मैं खड़ी गली में, दिल नहीं लगता मेरा ।
मेरे साजन मेरे सैयां, राह निहारूं तेरा ॥
२. घर आंगन खाने को आए, मन में भाव न जग का ।
भाव तो केवल तेरा प्रभुजी, न मेरा न तेरा ॥
३.मनवा तो अब लगा तुम्हीं में, समझत न समझाए ।
रोवत नयना पीर हृदय में, ध्यान है हरदम तेरा ॥
४. तुम अनंत हो अपरम्पारा, तुम सर्वज्ञ सुआमी ।
मैं तो अंधकूप तम माहीं, एक भरोसा तेरा ॥
५.आओ प्रियतम आओ प्रभुजी, शक्तिमान तुम दाता ।
दीन हीन की विनय सुनो तुम, कुछ न बिगड़त तेरा ॥
६. तीर्थ शिवोम् मैं कैसे कब तक, तुमरा पंथ निहारूं ।
अब तो आओ अब तो आओ, टूटा धीरज मेरा।

(५२) आयु के साथ साथ ही,

१. आयु के साथ साथ ही, जीवन निकल गया।
जो कुछ भी हाथ था मेरे, वह भी फिसल गया ।
२. अरमां की नींव पर, खड़ा मैंने भवन किया।
आयु के साथ साथ ही, सब कुछ खिसक गया ॥
३.अभिमान का घोड़ा दिया, गाड़ी में था लगा ।
आयु के साथ साथ ही घोड़ा बिदक गया ॥
४. यह वासना के बादल, आए थे आसमां में ।
आयु के साथ साथ ही बादल छिटक गया ।।
तीरथ शिवोम् अब तो, रोता फिरे जहां में।
आयु के साथ साथ ही सब कुछ बिखर गया

(५३) सुन उमरिया बात मेरी

१. सुन उमरिया बात मेरी, तू गई विरथा विहा ।
कुछ बना पाया न मैं तो, रत बना भोगों रहा ।

२.दिन दिन निकलता ही गया, पर मैं रहा हूं देखता ।
कर न कुछ पाया मैं तेरा. बस समय यूं ही बहा ॥

३.आरजुओं में तमन्नाओं में ही, उलझा रहा ।
देख पाया न तुम्हें भी, समझता कुछ रहा ॥

४.दिल ने जो कुछ भी कहा, सब मन लगा कर के सुना।
न सुना कुछ भी तो मैंने, जो कि तुमने था कहा ॥

५.शिव ओम् है मुजरिम तेरा, चाहे सजा जो दे मुझे।
आदर तेरा कुछ न किया, अपने लिये ही सब सहा ॥

(५४) भटकत रहा शिवोम् जगत में

१. भटकत रहा शिवोम् जगत में, पूछा किसे न कुछ भी ।
सद्गुरु देव शरण जब पाई, मिला उसे सब कुछ ही ॥
सद्गुरु देव कृपा से तुमरी, जीवन पलटत जाए ।
जब भी नज़र तुम्हारी होवे, हंस जीव है तब ही ॥
३. भटका जीव जगत में ऐसा, रोवत सदा ही रहता ।
किरपा से छुटकारा होवे, टूटे बंधन तब ही ॥
४. कृपा तुम्हारी हे गुरुदेवा, मुक्त कर दीनन को ।
रमण करे पी घर में अपने, होत मिलन है तब ही ॥
५. अनूप अनोखी, लीला प्रभुजी, अनुपम ही किरियाएं ।
अनुपम तेरे रूप रंग हैं, अनुपम अनुभव तब ही ॥
६. तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेव, जय हो सदा तुम्हारी ।
अनंद अनूठा दीनों मोहे छूटा, भ्रम है तब ही ॥

(५५) मनवा क्यों आया इस देश

१. मनवा क्यों आया इस देश
आया तू इस देश रे मनवा, पिया गए परदेश ।
२.पी बिन तेरा हाल बुरा है, विषयन माहीं लागा ।
होकर जग का सुआमी भी तू, बना फिरे दरवेश ॥
३. सब कुछ है अन्तर के माहीं, जग में है कछु नाहीं ।
अन्तर ही सब देव विराजें, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
४. पिया बसे अन्तर परकाशित, सदा एक रस रहता ।
देश काल की सीमा नाहीं, देश हो या परदेश ।।
५.तू ही मूढ़ बना है ऐसा दूर पिया को माने ।
पीय सदा ही तेरे अन्दर, अन्तर बसे विशेष ॥
६. तीर्थ शिवोम् पिया रंग राता, पी की सेज समाया ।
अन्दर बाहर पियहिं दीखत, पिय ही कृष्ण महेश ॥

(५६) चमन का नज़ारा

१. चमन का नज़ारा, बहलते बहलते ।
लगा सैर करने, बहलते बहलते ।
२. यह हरियाली फैली, खिले फूल यह हैं ।
हुआ मस्त मैं तो, बहलते बहलते ॥
३. चमन है यह दिलकश, यह दिलकश नज़ारे
गया भूल माली, बहलते बहलते ।
४.न माली ही केवल, गया भूल खुद भी ।
मुझे याद कुछ न, बहलते बहलते ॥
५.यही हाल दुनिया, बना हर किसी का।
है उलझा जहां मे, बहलते बहलते ।।
६. ऐ शिव ओम् सुन तू, यह दुनिया रंगीली ।
भुला न प्रभु को, बहलते बहलते ॥

(५७) काय करुं मन लागत नाहीं

१. काय करुं मन लागत नाहीं ।
पिया मिलन बिन तड़पत मनवा, धीरज हिरदय आवत नाहीं ॥
२. हरदम हिरदय हूक उठत है, नैनां दर्शन प्यासे ।
देखत रहत हूं राह पिया का, चैन कलेजा पावत नाहीं ॥
३. दशा अनोखी भयी है मेरी, सूझत पिया बिना न कुछ भी ।
उठत बैठत पिय ही सूझत, ध्यान पिया का जावत नाहीं ॥
४. कहां रहत है मोरा प्रियतम, मारग कौन है उसका ।
कौन बतावन हारा मुझको, राह पिया कुछ जानत नाहीं ॥
अपरम्पार पिया मेरा सुआमी, घर घर जगत समाया ।
इतना ही बस हूं मैं जानत, और मुझे कुछ आवत नाहीं ॥
६. तीर्थ शिवोम् मेरे हे सजना, हरदम भाव तेरा ही ।
रंग तेरे ही रंगी रहूं मैं, कुछ भी दूजा मांगत नाहीं ॥

(५८) इस अन्धेरी रात में कुछ

१. इस अन्धेरी रात में कुछ, सूझत मुझको नहीं।
पाओं मेरे डगमगाते, बूझता मुझको नहीं ॥
२. रात सूनी है भयानक, धड़कता है दिल मेरा
किधर जाना रास्ता भी, दीखता मुझको नहीं ॥
३.मैं बनी दीवानी, बढ़ती पी मिलन की आस में।
कदम पड़ते हैं कहां पर, भान यह मुझको नहीं ॥
४. बरसता पानी है सिर पर, गरजता तूफान है।
चमकती है बिजलियां, पर ध्यान यह मुझको नहीं ॥
५. न कोई मारग दिखाए, न बताए कुछ नहीं ।
किधर जाना कैसी मन्जिल, ज्ञान कुछ मुझको नहीं ॥
६. मैं चली शिव ओम्, चलती ही हूं चलती जा रही ।
अब तलक चलती हूं आई, छोड़ना मुझको नहीं ॥

(५९) लागा रे लगा रे

१. लागा रे लगा रे, हरि चरनन मन लागा रे ।
मन में जागी प्रीत प्रभु की, प्रभु उन्मुख मन जागा रे ॥
२. प्रभु ही दीखे, प्रभु ही सूझे, प्रभु ही है मन जाए।
प्रभु ही व्यापाक सर्व जगत में, ताहि में मन पागा रे ॥
३. जीव हरि तू सिमरत क्यों न, दूर तेरे दुख सारे ।
मन निर्मलता, मन हो थिरता, जो चरनन मन लागा रे ॥
४. संत जनां मन हरिहिं दीना, राम भजन ही कीना ।
अन्तर्सुख तिन अनुभव कीना, प्रेम प्रभु मन जागा रे ॥
५.तीर्थ शिवोम् आनन्दित मनवा, मन में प्रेम समाया ।
जगत रूप प्रभु ही का दीखत, आनन्द मन में जागा रे ॥

(६०) जगत में आया अकेला

१जगत में आया अकेला, अब अकेला जा रहा ।
साथ में आया न कोई, साथ में न जा रहा ।
२. रिश्ते नाते सब जगत के, जगत छोड़ा कुछ नहीं ।
जीव मरता जिनकी खातिर, साथ न है जा रहा ॥
३. आतमा तो एक है, साथी उसका न कोई ।
साथ जब तक है किसी का, आतमा-सुख जा रहा ।।
४. मन का ही सब खेल है, कोई साथी है नहीं ।
मन से उठे जब है ऊपर, खेल सब तो जा रहा ॥
५. छोड़ सब झगड़े बखेड़े न कोई तेरा यहां ।
मित्र शत्रु कुछ भी नाहीं, मैं पना तो जा रहा ॥
६. क्यों रहा शिवओम् तू, उलझा वृथा संसार में ।
राम में मन को लगा तू, है समय तो जा रहा ॥

(६१) एक यही तो बात है

१. एक यही तो बात है, प्रभु आसरा तेरा ।
ठौर तो दूजी है नहीं, वह ही करत निवेरा ॥
२. वह ही किरपा करत, वह ही देय सहारा।
सागर डूबत जन रहे, पार उतारे बेड़ा ॥
३. उसकी ही है लीला, वह ही कर्ता जग का ।
वह ही राखे दीनन को वह ही तेरा मेरा ॥
४. वही बनाए तोड़े, वही करत प्रतिपाला ।
उसके तारे जन तरे, वह सबका रखवारा ॥
५.जो जन सेवा करता, सुखी वही मन माहीं ।
डूबत जग में है नहीं, वह रक्षा करनारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् प्रभुजी, आया शरण तिहारी ।
चरणों माहीं राखो, आश्रय तू देनारा ।।

(६२) तेरी मौज बिना हे प्रभुजी

१. तेरी मौज बिना हे प्रभुजी, बात बने न मेरी ।
पुरुषारथ तो काम न आए, हो किरपा, न देरी ॥
२. अब तक तो मैं जतन में लागा, साधन किए हजारों ।
पर मैं बात बना न पाया, न ही तृप्ति मेरी ॥
३. माथे रगड़े तीरथ कीने, शंख भी बहुत बजाए ।
उलटे सीधे आसन कीने, रही वासना मेरी ॥
४. अब तो आया शरण तेरी मैं, देख सहारे सारे ।
तेरी किरपा से ही उतरे, नैया पार है मेरी ॥
५. करो कृपा हे प्रभुजी मो पर, आश तुम्हीं पह लागी ।
आशा नहीं निराशा होवे, टूटे आस न मेरी ॥
६. तीर्थ शिवोम् पुकारे तोहे, सुन लो, सुन लो सुन लो ।
तब तक रहू पुकार मैं तोहे, जब तक सुनत न मेरी ॥

(६३) सद्‌गुरुदेव, सद्‌गुरुदेवा

१. सद्‌गुरुदेव, सद्‌गुरुदेवा, कृपा करो हे सद्‌गुरुदेवा ।
आया शरण तुम्हारी देवा, नतमस्तक हो सद्‌गुरुदेवा ।।
२. जग जंजाल में घिरा हुआ हूं, विषयों में मैं गिरा हुआ हूं।
इनसे मैं तो निकल न पाऊं, कृपा करो हे सद्‌गुरुदेवा ॥
३.जगत बड़ा ही अत्याचारी, करत है मुझको बहुत खवारी ।
कैसे पिण्ड छुड़ाऊं इससे, कृपा करो हे सद्‌गुरुदेवा ॥
४.चरणों में मैं दीन पड़ा हूं, कर कुछ न मैं हीन बना हूं ।
मुझ पर हो अब वर्षा तेरी, कृपा करो हे सद्‌गुरुदेवा ॥
५.विष्णुतीर्थ प्रभु अन्तर्यामी, तीर्थ रूप हे कृपानिधानी ।
मन मेरा अब निर्मल कर दो, कृपा करो हे सद्‌गुरुदेवा ।।
६. तीर्थ शिवोम् पड़ा है चरणी, शरण छोड़ सब तुम ही शरणीं ।
एक दुआरा तुमरा पकड़ा, कृपा करो हे सद्‌गुरुदेवा ॥

(६४) अल्प बुद्धि मैं सीमित मन हूं

१.अल्प बुद्धि मैं सीमित मन हूं, तुम सर्वज्ञ अनन्ता ।
जान सकूं मैं कैसे तोहे, गुरुदेव बेअन्ता ॥
२.आवत जावत कहीं यह नाहीं, जनम मरण भी नाहीं ।
सदा एक रस एक समाना, गुरुदेव भगवन्ता ॥
३.कर्ता भर्ता जग का तू ही, तू ही जगत समेटे ।
महिमा तेरी तू ही जाने, गुरुदेव बलवन्ता ॥
४.गुण तेरे हैं अजब अनूठे, जगत गुणों से न्यारे ।
परिवर्तित वह होत कभी न, गुरुदेव गुणवन्ता ॥
५.जगत क्रिया का तू ही कर्ता, सकल क्रिया का स्वामी ।
मौज बिना न किरिया कोई, सद्गुरुदेव करन्ता ॥
६.तीर्थ शिवोम् यह किरिपा राखो, वह है शरण तिहारी ।
किरिपा बिन सुख नाहीं उपजे. हे गुरुदेव अनन्ता ॥

(६५) रे मन ! उछलत काहे रह्या

१.रे मन ! उछलत काहे रह्या ।
थिरता में है सुख घनेरा, पाय तू नाहीं रह्या ॥
२.उछलत कूदत भटकत फिरता, चंचलता अपनाई ।
भागत भागत अभी थका न, जग भरमाय रह्या ॥
३.जा जग में तू सुख को खोजे, वहां तो सुख है नाहीं ।
विरथा समय गँवावे अपना दुख ही पाय रह्या ॥
४.संत चरण है सुख के दाता, ता में ध्यान लगाय ।
ता में थिरता, मन निर्मलता, जाय न वहां रह्या ॥
५.अब भी सोच तू मूरख मनवा, बिगड़ा अभी न कुछ भी ।
संत चरण में राम भजन में, जन सुख पाय रह्या ॥
६.तीर्थ शिवोम् तुझे समझाऊं, तेरा भला है इसमें ।
जग से हटकर राम भजन, सुख बरसाय रह्या ॥

(६६) अब तक रहा समझता,

१.अब तक रहा समझता, दुनिया में सुख ही सुख है।
अब है समझ यह आई, दुख के सिवा न कुछ है ॥
२. दीखे तो दुनिया सुन्दर है, मोह मन को लेती।
पर पास से जो देखा, माया सिवा न कुछ है।।
३. देती दिखा तो सुख है, पर है दुखी यह करती।
देती दिखा तो कुछ है, पर देती कुछ का कुछ है ।।
४. दुनिया बनी जो ऐसी, फिर क्या भरोसा इसका।
देवे दिखा तो अमृत, पर देती जहर कुछ है ॥
५. दुनिया से है यह अच्छा, मन राम भजन लागे।
उसमें तो सुख ही सुख है, उसमें तो सब ही कुछ है ॥
६. तीरथ शिवओम् अब तू, दुनिया में मन लगा न।
धोके का है यह पुतला, जिसमें नहीं तो कुछ है ॥

(६७) गई अनेकों बीत बहारें

१. गई अनेकों बीत बहारें, एक एक कर जीवन में।
फूल चमन में खिले नहीं हैं, हुई निराशा जीवन में ।।
२. जीवन भी संग्राम सरीखा, जीत सका न जिसको मैं।
अन्तर्शत्रु एक मरा न, हार हुई है जीवन में ॥
३. रहे तरंगित मन है मेरा, जग की इच्छाओं से रहता।
हटें नहीं मन से यह लहरें, इच्छा लहर ही जीवन में ॥
४. कैसे हटेंगी यह इच्छएं, कैसे मनवा सुख पाए।
कैसे मिलेगा प्रियतम मोहे, सूझत नाहीं जीवन में।
५. जीवन तो निकला ही जाए, पल आए पल बीत गया।
पीय मिलन की चाह अधूरी, पूरी हुई न जीवन में ।।
६. तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, अब भी तो कुछ सोच जरा।
जीवन विरथा निकला जाए, न कुछ पाया जीवन में ॥

(६८) हे प्रभु आश लिए चरणों में आया हूं तेरे

१.हे प्रभु आश लिए चरणों में आया हूं तेरे ।
मुझको बचा ले प्रभु, द्वार पह आया हूं तेरे ॥
२.मैं सवाली हूं तेरा, आश मेरी तुझसे है ।
बन भिखारी मैं तेरा, मांगने आया हूं तेरे ॥
३.मुझ को दरकार नहीं, धन या जमीं या कुछ ।
तुमको ही मांगने की इच्छा से, आया हूं तेरे ॥
४.तुम बिना चैन नहीं, तुम से ही मन में सुख है।
तुम से ही नाता मेरा, तेरे लिए आया हूं तेरे ॥
५.मुझको भूलो न प्रभु, दास हूं तेरा मैं तो ।
पाने दर्शन मैं तेरा, घर पह आया हूं तेरे ॥
६.मैं हूं शिव ओम् खड़ा, झोली लिए दर पह ।
कहीं लौटा न देना, लेने ही कुछ आया हूं तेरे ॥

(६९) चलते चलते.....

१.चलते चलते, मैं तो दुनिया से ही, इक दिन चल दिया।
जगत तो न साथ आया, उसने मुझसे छल किया॥
२.जिस जगत के ही लिए, जीवन दिया अपना गंवा ।
उसने दिया न साथ मेरा, मुझको चलता कर दिया ॥
३.जगत है अब साथ न, आगे भी कुछ नाहीं मिला।
मुझको बेदर कर दिया, मुझको तो बेघर कर दिया ।।
४.सोचता अब मैं यही हूं, मन क्यों दिया संसार में।
जिसमें धोका ही भरा था, उसको अर्पण कर दिया ।।
५.अब रहा पछताय मैं, होने का अब तो कुछ नहीं ।
मुझको बेदिल कर दिया, मुझ में तो दुख ही भर दिया ।।
६.शिवओम् रोते ही चला है, जगत को अब छोड़कर ।
कोई भी मन न लगाए, जग ने मुश्किल कर दिया ॥

(७०) जानकर आया जगत में

१. जानकर आया जगत में, सुख मिले मुझको यहां ।
पर यहां तो बात उलटी, नाम को न सुख यहां ॥
२.सुख तो दीखे, सुख नहीं है, सुख है केवल झलकता ।
सुख नहीं पर दुख मिले है, दुख ही दुख तो है यहां ॥
३.हे प्रभु क्यों मुझको भेजा, दुख की नगरी में मुझे ।
ठग लिया है छल लिया है, भेजकर मुझको यहां ॥
४. क्यों बनाया दुख है इतना, सुख तुम्हें भाता नहीं ।
दुख बनाया तो बनाया पर दिखाया सुख यहां ॥
५.दुख में डूबी है यह दुनिया, सुख लिए ललचाए है।
खेल तेरा यह अनोखा, भर दिया दुख ही यहां ॥
६.मैं तो ऊबा दुख से हूं, भोगते दुखों को मैं ।
चल दिया शिवओम् अब तो, भोगकर दुखों को यहां ॥

(७१) आओगे कब को सैंया

१. आओगे कब को सैंया, कुछ तो मुझे बताओ ।
बेहाल मैं पड़ी हूं, कुछ तरस भी तो खाओ ॥
२.मैं राह देखूं हरदम, हर पल तुम्हें निहारूं ।
आंखें भी सूजी मेरी, मुखड़ा मुझे दिखाओ ।।
३. कब की रही खड़ी हूं, खोले किवार घर के ।
अब आओ, आ भी जाओ, मन की तपश बुझाओ ॥
४. मेरे प्रभुजी अब तो, धीरज हृदय का छूटा।
तुम पर असर नहीं है, अब मान जाओ, आओ ।
५. आंखों में नींद नाहीं, नयनां खुले ही राखूं ।
आकर निकल न जाओ, फिर आओ कि न आओ ।।
६. तीरथ शिवोम् अब तो, अकुला गया है मनवा ।
साजन मेरे प्रभु हैं, अब तो दरस दिखाओ ।।

(७२) नाम रूप धन है सब धोका

१. नाम रूप धन है सब धोका, कोई न इसमें उलझे ।
जीव फँसे माया नगरी में, राम नाम सब सुलझे ॥
२.छल से हरत है धन दूजे का, औरन, दोष लगावे
माया संचय करत रहत है, माया में ही उलझे ॥
३. माया देखन मीठी लागे, अनुभव होय तो कड़वी ।
जीव के संग न माया चाले, जीव इसी में उलझे ॥
४. लाभ न कोई संचय माया, अन्ते साथ न जावे
फिर क्यों इसको संचय कीजे, काहे इसमें उलझे ॥
५.राम नाम जो भूले मन सों, मन तृप्ति न पावे ।
न ही मन संतुष्टि पावे, उलटे जग में उलझे ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो मन मूरख, जगत यह माया नगरी ।
जो पीवे रस नाम हरि का, वह क्यों इसमें उलझे ॥

(७३) जा घट हो नाम उचारित

१. जा घट हो नाम उचारित, तृष्णा तहां नसावे ।
श्वास श्वास जो सिमरन करता, ता में राम रहावे ॥
२. राम नित्य अविनाशी प्रभु है, ता को नाहीं बिसारे ।
राम हि नाम सदा मन राखे, आशा सभी पुरावे ॥
३. कर्म करे तो प्रभु राम का, सेवा समझ उसी की ।
संचित ताके निर्मल होते, राम नाम मन लावे ।।
४. लगा रहे गुणगान हरि में, मनवा ताहि राखे ।
उसके सकल मनोरथ पूरे, नाम नहीं बिसरावे ॥
५.तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, मो पह किरपा कीजो।
राम नाम हिरदय के माही, मनवा राम धियावे ॥

(७४) धन्य वही जन हरिगुण गाए

१.धन्य वही जन हरि गुण गाए ।
रसना नाम जपे दिन राती, राम ही राम धियाए ।
२. हरि का नाम छोड़ सब किरिया, विरथा कर्म कमाना ।
एक हरि ही सार जगत में, ता में ही लिव लाए ।
३. ते बड़भागी राम जपे जो, नाम से उच्च न कोई ।
राम नाम हिरदय में धारण, ता को सीस झुकाए ।
४.राम नाम हिरदय में परगट, लीला उसकी न्यारी।
हरदम देखे खेल उसी के, उसमें ही रम जाए।।
५.अन्तर कर्म जो संचित उसके, क्षीण सभी हो जावे।
अन्तर भाव क्रिया हो परगट, अन्तर ही सुख पाए।।
६. तीर्थ शिवोम् प्रणाम करूं मैं, ऐसे साधु जन को ।
छका रहे मस्ती में छिन छिन, राम से प्रेम करावे ॥

(७५) भव नदिया हरि पार कराए

१.भव नदिया हरि पार कराए ।
नाम सिमर ले राम प्रभु का, दुख बंधन कट जाए ॥
२.यह जग माया मोह पसारा, जीव को भ्रम में डाले ।
राम नाम की डोरी पकड़े, शंका दूर हटाए ।
३.हर पल प्रभु का नाम धियावे, ता में ही मन लावे ।
मन निर्मल दुर्गति भगावे, आसक्ति हट जाए ॥
४.सतसंगत में चित्त लगाओ, मन संकोच हटाओ ।
श्वास- श्वास में राम विराजे, तम को परे हटाए ॥
५.तीर्थ शिवोम् सुनो हे प्यारे, मस्तक श्री चरणों में ।
गुण गाओ गोविन्द हरि के, सन्त चरण मन लाए ॥

(७६) सिमरूं हर दम नाम प्रभु का

१.सिमरूं हर दम नाम प्रभु का।
श्वास श्वास ता में मन राखूं, दीन दयाल हरि का ॥
२.हरि सिमरन से मन आनन्दित, चिन्ता तृष्णा भागे
हरि नाम मन हो परकाशित, लागे ध्यान प्रभु का ।।
३.यहां वहां हरि नाम सहायक, रक्षक सभी जगह है।
गुरु का शब्द बसे मन अन्दर, भय ना ही डूबन का ॥
४.राम नाम धन रतन अमोलक, चोर न सकत चुराय ।
आग में यह धन जलता नाहीं, यह धन है निर्धन का ॥
५.तीर्थ शिवोम् कृपा है कीनी, परगट नाम कराया।
यह जहाज भव पार करावे, नाशक जनम मरन का ॥

(७७) संत चरण नौ निधि विराजे

१.संत चरण नौ निधि विराजे ।
दीन दयाल कृपालु जन पर अनुपम कृपा कराजे ।।

२. संत सदा आनन्द समाना, शरण प्रभु मन माही ।
राग द्वेष से रहे अछूता, मस्त रहे हरि काजे ॥

३. जग सर्वत्र हरि ही देखे, हरि बिन दूजा नाहीं ।
कण-कण व्यापक हरि निवासे, जग में वह ही साजे ॥

४.ऐसा अनुभव संतन पाया, यह ही प्रभु कृपा है।
जग में रहकर जग में नाहीं, संत चरण बहु साजे ।।

५.हरि कृपा करत दीनन पर तीर्थ शिवोम् है चरणी ।
पापी कपटी शरण में आया, पत राखो हरि आजे ॥

(७८) मनवा राम बसे अन्तर में

१. मनवा राम बसे अन्तर में ।
राम बसे माया तम नाशे, जीवन बीते सुख में ॥
२. जनम मरन को दुख घनेरो, जीव को फिर फिर होवे ।
राम मिटावे यह सब पीड़ा, आन बसे अन्तर में ॥
३.सुरत लगी जा हरि चरणों में, महिमा कही न जाए।
मृत्यु ता को देख न पाए, रमा हरि चरणों में ॥
४. ता का मन रंगा रंग नाहीं, ता का रंग न्यारा ।
हरि रंग में देखे जग को, आनन्द है अन्तर में ॥
५. माया में तू न बंध जाना, माया नीच है ठगनी ।
दुविधा दूर हटे है मन की, सुख होवे अन्तर में ॥
६. तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, क्यों खोजत बाहर है।
नाम निधान तेरे मन माहीं, पा ले तू अन्तर में ॥

(७९) जनम मिला मानुष का तोहे

१. जनम मिला मानुष का तोहे, हरि चरणों में मन को लगा ।
गुरु का ज्ञान धर अन्तर में, प्रेम प्रभु का हृदय जगा ।
२. प्रभु की महिमा अपरम्पार, नाश करत है तम को ।
ता ही शरण गहे तू मनवा, हिरदय ताही नाम बसा ॥
३.सुनत प्रभु की वाणी अन्तर, क्षीण करे पापों को ।
करती सब शंका निवृत्ति, ता ही में तू ध्यान लगा ।।
४.स्वेच्छाचारी जान जगत में, माया मोह में उलझा ।
कर्म कुकर्म विवेक न जाने, देता जीवन वृथा गंवा ॥
५.मैं समझाऊं तुझको मनवा, प्रभु कृपा यह तनवा ।
जा कारज तुझको यह दीना, ता कारज ही इसे लगा ||
६. तीर्थ शिवोम् यही उपदेशा, आज्ञा शास्त्र यही है ।
मानुष देह अमोलक वस्तु विरथा इसको नहीं गंवा ॥

(८०) धन्य जीव जो गुरुमुख होवे

१.धन्य जीव जो गुरुमुख होवे ।
गुरु का ज्ञान धरे हिरदय में, गुरु सेवा में तत्पर होवे ।।
२. मन को राखे अपने वश में, विषयों की अधीनता नाहीं ।
रहे जगत में कमल की भाँति, हिरदय प्रेम प्रभु का होवे ॥
३.सुरत रहे हर दम चरणों में, मन चंचलता है नाहीं ।
दया भाव अक्रोध हो अन्तर, पर निन्दा मनवा न होवे ॥
४. गुरु शरणागत होकर बुद्धि, धारण करे सदा थिरता ।
प्रेम के संग सदा रंगीला, सिमरन नाम में रत होवे ॥
५.धन्य जीव जो ऐसा गुरुमुख, गुरु में सकल जगत देखे
सकल जगत में गुरु को पेखे, निर्मल रूप सदा होवे ॥
६. बलिहारी मैं ऐसे गुरुमुख, तीर्थ शिवोम् प्रणाम करे
टिका रहे गुरुचरणों माहीं, गुरु बिना कुछ न होवे ॥

(८१) सत्य व्यौहार प्रभु का नाम

१. सत्य व्यौहार प्रभु का नाम ।
जा यह दोनों साधन कीने, जावे वह है हरि के धाम ॥
२. सेवा कर व्यौहार करे जो, अपनापन नाहीं राखे ।
कर्म न उसके संचित होवे, छोड़ जगत पाए वह राम ॥
३. प्रभु का नाम अलौकिक शक्ति, क्षीण करे वह पापों को ।
मन निर्मलता विकसित करती, बिगड़े न कोई भी काम ॥
४. राम प्रभु की सेवा करना, सत्य यही तो है व्यौहार ।
सेवा साधन को अपना कर, प्राप्त राम और उसका धाम ॥
५.तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, राम ही बेड़ा पार करे।
राम हृदय में धारण कर ले, रहने दे सब यूहीं दाम ॥

(८२) यह जग जनम मरण की माया

१. यह जग जनम मरण की माया ।

माया टूटे राम भजन से, पुनह न मिलती काया ॥

२. जा पर कृपा राम की होवे पार करे यह माया, क्लेश सभी मिट जावे ।

आवागमन चक्र यह छूटे, क्यों फिर जग में आया ।।

३. लीन रहे हरि चरणों माहीं, नित्य भाव होते परगट ।

मिथ्या त्याग जगत की माया, नित्य रूप है पाया ॥

४. राम करत है कृपा जीव पर, कृपा शक्ति प्रगटावे ।

निर्मल कर दो सब कर्मों को, राम नाम मन भाया ॥

५. कृपा शक्ति है अजब अलौकिक, लीला करत अनेकों ।

तोड़ देते वह सीमाओं को, अनत जीव सुख पाया ।।

६. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता हूं में शरण तिहारी ।

किरपा दृष्टि राखो मो पर, दूर हटे यह माया ॥

(८३) जिन्हां राम है प्यारा राम बसे मन के अन्दर

१. जिन्हां राम है प्यारा राम बसे मन के अन्दर ।

प्रभु रंग में ही रंग जाते, हिरदय उनका है मन्दिर ॥

२. जन्म मरण है छूटे उनका, मन लागे हरि चरणों में ।

मनवा सदा आनन्दित रहता, पावे राम हृदय अन्दर ।।

३. जिन्हां राम नाम परकाशित, दूर होत है तम उनका ।

अन्तर बाहर सुख को पावे, मस्त रहे मन के अन्दर ॥

४. होवत लीन प्रभु में आखिर, माया काया छोड़ सभी ।

बूंद मिले सागर में जाकर अपना आप प्रभु अन्दर ।।

५. तीर्थ शिवोम् मेरे भगवन्ता, अपरम्पार है महिमा तेरी ।

अपने जन को पार उतारे, लीन करे अपने अन्दर ।।

(८४) मूरख माया मोह करत है

१. मूरख माया मोह करत है।
जग आसक्ति दुख का कारण, क्यों न राम जपत है॥
२. मारग भूले मोह के कारण, माया लिपटत जाए।
पर मूरख माया लिपटाना, जग से नाही हटत है॥
३. मातापिता सगला परिवारा, मोह करे परकाशित।
जीव उलझता भव बंधन में, डूबत नाही हटत है।
४. क्यों चेते न मूरख मनवा, काहे मोह करत है।
राम बचावन हारा तुझको, शरणी नाहीं पड़त है।
बार बार आए और जाए, कोहलू बैल बना तू।
मन में धारण राम नाम कर, आयु जात घटत है।।
६. तीर्थ शिवोम् तुझे समझाए, मूरख काहे बना है।
राम भजन कर, राम सिमर तू, मोह जंजाल करत है।।

(८५) हे प्रभु दाता स्वामी तुम हो

१. हे प्रभु स्वामी दाता तुम हो, करण करावन हारे।
मैं हूं शरण तुम्हारी प्रभुजी, रक्षक तुमीं हमारे।।
२. जीव तम्हारे आश्रित पलते, आज्ञा तुमरी माने।
जो चाहो करवा लो ऐसा, सेवक सभी तुम्हारे॥
३. तुम ही देते सब जीवों को पालन हार तुमीं हो।
माता पिता और सखा सुआमी, तुम ही सभी हमारे॥
४. घट-घट वासी अन्तर्यामी, सब के मन की जानो।
बात छुपी न कोई तुम से, तुम ही जानन हारे।।
५.मारग गुरु कृपा है केवल, तुम को पाने हेतु।
परगट गुरु रूप में हम पर, हम हैं तुमरे द्वारे॥
६. हम पर कृपा करो हे स्वामी, तीर्थ शिवोम् पुकारे।
भव बंधन में पड़े हुए हैं, तुम ही काटन हारे।

(८६) जा पर कृपा करे गुरु मेरा

१. जा पर कृपा करे गुरु मेरा, जीवन में सुख पाता ।
संशय विपदा दूर हटे सब, मन शीतल हो जाता ॥
२. आदर पावे प्रभु के घर में, आदर यहां भी होता ।
यहां वहां सब किरपा उसकी, मन आनन्द मनाता ॥
३.शरण लेत जो गुरु देव की, अक्षय सुख को पावे ।
जगह मिले है प्रभु चरणों में, जीवन का फल पाता ॥
४.मन की दुविधा दूर हटे सब मन चंचलता जाए।
मन उसका हो उसके वश में, क्रोध लोभ सब जाता ॥
५. जो न लेवे गुरु शरण को, जीवन में दुख देखे ।
यम द्वारे पर ताड़ित होता, विरथा जनम गंवाता ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो मन मूरख, गुरु की शरण गहे तू ।
मानुष तन का सार यही है, काहे समय गँवाता ।।

(८७) गुरु संगत जा के मन भावे

१. गुरु संगत जा के मन भावे ।
ता के हिरदय राम की भगती, सहज प्रकट हो जावे ॥
२. गुरु सेवा में जो मन लावे, पाप क्षीण हो मन के ।
निर्भिमान सुखी वह होता, भ्रम शंका मिट जावे ॥
३. छका रहे आनन्द के माही, आशा तृष्णा त्यागे ।
माया दूर हटे ता मन से, धाम प्रभु के जावे ॥
४. उन पर कृपा करो मेरे स्वामी, जो गुरु चरन न लागे ।
तुम तो दीन दयाल प्रभुजी, गुरु प्रेम जग जावे ॥
५. दान करो गुरु प्रेम सभी को, हे प्रभु अन्तर्यामी ।
दुख को भोगत जीव है हारे, दया दृष्टि हो जावे ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण में आया, गुरु भक्ति मोहे दीजो ।
गुरु ही सर्व व्यापक देखूँ, गुरु चरणों मन हो जाए ।

(८८) राम भजन से आनन्द उपजे

१.राम भजन से आनन्द उपजे, जनम मरन भय छूटे ।
आशा ममता दूर हटे सब, माया बांध है टूटे ॥
२.भजन में तो आनन्द घना है, मन शीतलता पावे।
ज्यों ज्यों मन विकार हैं जाए, मनवा सुख को लूटे ।।
३.माया तृष्णा है दुखदायी, या कष्ट बहुत ही देती ।
भजन भाव से तृष्णा जाए, वह भी मन से छूटे ॥
४.भोग वासना अगनी बनकर, रहती हृदय जलाए।
अगन बुझे है राम भजन से, भाव शान्त है फूटे ॥
५.धन्य राम जय भजन प्रभु का, तीर्थ शिवोम् पुकारे ।
भजन भाव आनन्द वयापे, राम राम रस लूटे ॥

(८९) मोहे अपने पास बुला लीजो

१.मोहे अपने पास बुला लीजो।
काम क्रोध से रहूं न्यारा, इनसे मुझे छुड़ा लीजो ।।
२.मोह लोभ है मोहे सतावें, बंधन में मैं इनके ।
छूटूँ कैसे, है बलकारी, इनसे मुझे बचा लीजो ।
३.मैं न जानूं भक्ति क्या है, तुम्हीं सिखान् हारे ।
जानूं भक्ति, धारूं भक्ति, अपना भक्त बना लीजो ।।
४.तुमरी किरपा भक्ति सागर, मल मल गोते लाऊं ।
किरपा शक्ति अन्तर जागे, अन्तर्मुखी करा लीजो ॥
५.तुमरा मैं गुण गान करूं नित, मनवा मस्त बना हो ।
भजन भाव में मन हो रमता, अपना नाम गवा लीजो ॥
६.मैं शिवओम् शरण में तेरी, तेरा एक सहारा ।
तेरे बिन दूजा न कोई, चरणो माहीं लगा लीजो ॥

(९०) जीव, क्यों तोहे समझ न आए

१. जीव, क्यों तोहे समझ न आए।
देह तेरी निर्बल भी हो गई, फिर भी समझ न आए ।।
२. हंस की नाईं केश श्वेत हैं, नयनन नीर बहे है ।
कण्ठ रुका, तू बोल न पावे, फिर भी समझ न आए ।।
३. बाल ग्वाल भी युवा भए हैं, अपने मन की करते ।
तेरा कहा न कोई माने, फिर भी समझ न आए ।।
४. क्रोध मोह में लग कर तूने, सारा जनम गवाय ।
अब तो समय चलन का आया, फिर भी समझ न आए ।।
५.अब तो तनिक समझ जा मूरख, जग न साथ चलेगा ।
यहां सदा न कोई रहता, फिर भी समझ न आए ।।
६. तीर्थ शिवोम् रहा समझाए, आवन जावन जग है ।
सुखी यहां न कोई होता, फिर भी समझ न आवे ।।

(९१) दुर्लभ मानुष जनम है भाई

१. दुर्लभ मानुष जनम है भाई ।
साधन का घर मानुष तनवा, विरथा चला न जाई ।।
पुण्य कर्म हैं संचय कीने, तो दुर्लभ तन पाया ।
अब तो नासमझी के कारण, विरथा जात विहाई ॥
हरि का भजन नहीं मन भाया, रस प्रपंच के माहीं ।
यह तनवा यूं ही लुट जाए, हाथ कछु नहीं आई ॥
४. जो करना था सो न किया, सोची सभी बुराई ।
कैसे लाभ जनम में होगा, व्यर्थ चला ही जाई ॥
५. मन के भाव विदित न हमको, करनी अनुचित हमरी ।
भान्ति भान्ति से मन भरमाए, अनुचित लाभ कमाई ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो मन मूरख, अनुपम यह जीवन है ।
राम भजन बिन विरथा जाए, जनम अमोलक जाई ॥

(९२) गुरु देत है राम रतन धन

१.गुरू देत है राम रतन धन, करत अनुग्रह जीवों पर ।
राम नाम धन पार उतारे, उपकार करत है जीवों पर ॥
२.राम नाम धन ऐसा धन है, करता प्रकट प्रभु को है ।
दीनों के दुख दूर करत है, हो परकाशित जीवों पर ॥
३. सेवा करत है राम नाम की, अक्षय सुख को पाता वह ।
जनम जनम के दुख नसावे, चमत्कार यह जीवों पर ।
४.सद्गुरु देव दया बहु कीनी, राम नाम परदान किया ।
वह उपकार अलौकिक करते, दीन हीन इन जीवों पर ॥
५.गुरु सेवा और राम की सेवा, इनमें अन्तर है नाहीं ।
यह सेवा उद्धार करत है, सुख बरसावे जीवों पर ।
६.तीर्थ शिवोम् शरण गुरु देवा, पापी नीच कुकर्मी हूं।
तुम दीन दयाला प्रभुजी, दयावान हो जीवों पर ॥

(९३) क्या सितम तुमने किया

१.क्या सितम तुमने किया, मुझ पर मेरे ऐ महरबां ।
मैं न रोऊ हिजर में भी, जबकि होता है जहां ॥
२.क्या गजब तुमने किया, जो दर से रुख्सत कर दिया।
अब बता जाऊं कहां पर, कर दिया बे आशियां ।।
३.क्या नहीं मालूम था यह, जल रहे हम इश्क में ।
कर दिया बस राख हमको, हो गए बे पासबां ॥
४.क्या खबर यह न तुझे थी, हम हैं दीवाने तेरे।
दर बदर हमको फिराया, लुट गया सारा जहां ॥
५.क्या करें जाएं कहां पर, किसको पूछे जा के हम ।
है कोई न आसरा अब जा के रोएं हम जहां ॥
६.क्या पता शिव ओम् अब है, होने वाला क्या यहां ।
है नहीं कोई भी अपना चैन पाए हम जहां ॥

(९४) लड़ता रहा में जूझता

१. लड़ता रहा मैं जूझता, यह बासना टूटी नहीं ।
अब तक लदी मुझ पर वह है, तृष्णा तो है टूटी नहीं ॥
२. आयु निकल सारी गई, पर मन तो मानत है नहीं ।
जाए वह विषयों ओर ही, यह वासना टूटी नहीं ।
३. अब तक बनी बलवान है, कोई भी अन्तर है नहीं ।
अब तक सताती मुझको है, यह वासना टूटी नहीं ॥
४.कैसे मैं तोड़ूं वासना, कैसे बनूं उपराम मैं ।
मैं तो चला हूं टूट अब, यह वासना टूटी नहीं ॥
५.भगवान है मेरी विनय, लड़ता मैं हारा थक गया ।
है वासना थकती नहीं, यह वासना टूटी नहीं ॥
६.शिवओम् आया शरण में, रक्षा करो, रक्षा करो ।
मैं तो हटा पाया नहीं, यह वासना टूटी नहीं ॥

(९५) ब्रह्म अखण्ड का स्वामी प्रभुजी

१. ब्रह्म अखण्ड का स्वामी प्रभुजी, वह ही पालनहारा ।
दाता एक हैं जीव अनेकों, सब को देवन हारा ॥
२. वह ही राम कृष्ण है, वह ही पीर पैगम्बर नाम धरे ।
सारा जग उसकी ही लीला, कौतुक करने हारा ॥
३. राम बनावे, राम बिगाड़े, मौज है उसकी न्यारी ।
अलख अगोचर सर्व नियन्ता, खेल करावन हारा ॥
४. जीव बेचारा अंधकूप में, कुछ न उसको सूझे ।
वह डूबा हंकार में ऐसा, पर वह मांगन हारा ॥
५. राम ही रक्षक सब जीवों का, वह प्रतिपालक सबका ।
जीव बेचारा गोते खाए, पार करावन हारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् हूं चरण तिहारी, तुम्हीं बचावन हारे ।
अंधकूप तें मोहे काढ़ो, पीर मिटावन हारा ॥

(९६) चिन्ता जाए प्रभु भजन से

१. चिन्ता जाए प्रभु भजन से, मन की पीर है मिट जाती ।
हरदम जीव रहे आनन्दित, माया गांठ है खुल जाती ॥
२.कौतुक अद्‌भुत घटित है अन्दर, हृदय कमल खिल जाता है ।
तृष्णाएं सब लीन होत हैं, बुद्धि निर्मल बन जाती ॥
३.गुरु कृपा जब परगट होती, भजन सहज होने लगता ।
पाप क्षीण तब होते जन के, वृत्ति थिरता पा जाती ।
४.काम लोभ जो बहुत सताते, डरते सन्मुख आने से ।
आशाएं सब तृप्त हुई हैं, प्रभु मिलन की रह जाती ॥
५. जीव भजन से क्यों कतरावे, बात समझ न आती है ।
पड़ा रहे वह जग विषयों में, बुद्धि चंचल हो जाती ॥
६. तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, हरि भजन सुख का दाता ।
हरि भजन ही पार करावे, माया ममता हट जाती ॥

(९७) जा हरि चरण प्रीत मन नाहीं

१.जा हरि चरण प्रीत मन नाहीं, उलझा रहे जगत माहीं ।
आशा तृष्णा पड़ा रहत है, छूटत नहीं जगत माहीं ॥
२. जा हिरदया हरि चरण विराजे, आतम सुख वह है पाता ।
पार करत भव सागर को वह, मुक्त होत छिन के माहीं ।
३.भव व्याधि छुटकारा पावे, जो मन प्रभु भजन लावे ।
जग आसक्ति जावे मन से, पड़े नहीं विषयों माहीं ॥
४.हे प्रभु जो है शरण तिहारी, पाप सभी कट जाते हैं।
होता मुक्त वह बंधन से है, आदर पावे जग माहीं ।
५.होत सुखी सुख देत सभी को, मन उदार होता उसका ।
यही प्रभु गुण है जो तुमरा, पावत वह हिरदय माहीं ॥
६.तीर्थ शिवोम् तुम्हारी किरपा, जो मुझ पर भी हो जाए।
भजन करूं और सुखी रहूं मैं, चिन्ता रहित मैं जग माहीं ॥

(९८) प्रभु प्रेम मतवाला मानव

१. प्रभु प्रेम मतवाला मानव, प्रभु प्रेम में रंगा रहे।
ऊठत बैठत हरदम वह तो, नेह प्रभु में रमा रहे ।।
२. राजा व्यस्त वना रहता है, राज काज के कामों में।
वैसे हर पल भक्त प्रभु का, प्रभु प्रेम में छका रहे ।।
३.भला लगे गुणगान प्रभु का, और नहीं मनवा जाए।
प्रभु सिमरन और राम भजन में, वह तो हरदम लगा रहे।
४. प्यासा जो हरि दर्शन का हो, मनवा वहीं लगा रहता।
तीर्थ शिवोम् हरि का सिमरण, भक्तन के मन बसा रहे ॥

(९९) हम मलीन पापी दुख राशि

१. हम मलीन पापी दुख राशि, सब कुकर्म करनारे।
हे स्वामी तुम पतित उधारन, पार करावन हारे।
सब अवगुण हम माहीं विराजे, तुम गुणवन्त प्रभुजी।
एक भरोसा केवल तुमरा, हम है बहुत दुखारे ॥
३. तुम दाता हम नीच भिखारी, दर पह तुमरे आए।
पत राखो प्रभु हम दीनन की, डूबत रहे मंझारे।
४. जग में हम ऐसे हैं उलझे, कर्म बुरे ही करते।
पल पल हमें सताती माया, तुम्हीं बचावन हारे ॥
५. सुनो प्रभु जी विनय हमारी, दीन हीन हम भारी।
आश लिए आए हैं दुआरे, दीन दयाल मुरारे ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण में तुमरी, दूजा नहीं सहारा।
बुरे सही पर बालक तुमरे, हे रक्षा करनारे ॥

(१००) धन जौवन मिथ्या सब जानो

१.धन जौवन मिथ्या सब जानो, मिथ्या घर परिवारा
मिथ्या मात पिता और बांधव, मिथ्या है संसारा ॥
२. बोलन चालन सगला मिथ्या, जीव रहा भरमावे ।
धरती अगन पवन सब मिथ्या, मिथ्या सब व्यवहारा ॥
३. मिथ्या जग है कर्म करन को, सेवा समझ करे जो ।
नहीं तो जीव बंधा जग माहीं, भूले प्रभु विचारा ॥
४.जग बंधन छूटन का मारग, सद्गुरु बिना मिले न ।
गुरु कृपा सद्कर्म कमावे, खुलता मुक्ति द्वारा ॥
५. मिथ्या जग है सत्य भासता, जीव जो मनमुख होवे ।
करो कृपा है मेरे गुरुवर, जग से हो निस्तारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् गुरु का मारग, जग से पार करावे ।
सुखी रहे चंचलता जाए, मन आनंद अपारा ॥

(१०१) मन दर्पण तेरा है मैला

१. मन दर्पण तेरा है मैला, मैला ही जग दिखे तुझको ।
जैसा भाव है तेरे मन का, वैसा ही जग दिखे तुझको ॥
२. जब अन्दर तेरे जड़ता है, तब जड़ता तुझको परगट है।
चेतनता धारण कर अन्दर, चेतन ही सभी दिखे तुझको ॥
३. जब मन आनन्द समाया हो, तब अनुभव होत आनन्द सभी ।
जब क्रोध लोभ हो अन्तर में, तब वही दिखे फैला तुझको ।
४. तेरे ही मन का खेल सभी, जैसा मन वैसा दीखेगा ।
जब राम बसा तेरे अन्दर, तब घर घर राम दिखे तुझको ॥
५. है तीर्थ शिवोम् पड़ा चरणी, मन निर्मल मुझे प्रदान करो।
कर जोड़ूं शरण तुम्हारी मैं, बस यही विनय करता तुझको ।

(१०२) भेद अभेद गया सब तेरा

१. भेद अभेद गया सब तेरा गुण गोविन्द जो गाया तैने ।
यह रस अजब अनोखा भैया, एक बार रस पाया तैंने ।।

२. मनवा भीगे या रस माहीं, आतम राम भया तू ।
डाल डाल तेरा मन उछले, एक बार प्रभु पाया तैने ॥

३. शोक मोह नाठे मन माहीं, सकल उजाला होया ।
अन्तर में आनन्द भया है, राम नाम मुख गाया तैने ॥

४. गुरुकृपा से होत अनुठा अनुभव राम प्रभु का।
तीर्थ शिवोम् मगन है ऐसा, एक बूंद रस पाया तैने ।

(१०३) भटक भटक दुख पायो

१. भटक भटक दुख पायो मैं तो, शरण तिहारी आयो ।
ठौर ठिकाने सारे देखे, अन्त तुम्हीं पह धायो ।।

२. दुनिया पूजे औरन देवा, इधर उधर बहु भागे ।
मोरे मन तो तुम्हीं समाए, एक तू ही है भायो ।।

३.सब देवन के तुम्हीं देव हो, यह ही सुनते आए ।
तुम पह ही अरदास हमारी, तेरा ही गुण गायो ॥

४.आशा मन की सब ही त्यागी, एक आश बस तेरी ।
हमारी आश करो प्रभु पूरी, चरणों माहीं आयो ।।

५. तीर्थ शिवोम् ह्रदय में धारूं, चरण कमल जो तेरे ।
शरण पड़े की बांह गहो अब, द्वारे तुमरे आयो ।।

(१०४) रात चांदनी छिटक मनोहर

१. रात चांदनी छिटक मनोहर, झिलमिल झिलमिल तारे ।
वंशी श्याम बजावे मीठी, मन आनन्द अपारे ।।

२. अमृत बरसे चहुं दिशा में, अद्‌भुत रंग अनंता ।
मन अलमस्त बनो है ऐसा, आशा तृष्णा जारे ॥

३. बिन गाए कोई राग अलापे, बिना बजाए बाजे ।
अद्‌भुत लीला श्याम सुन्दर की, न कोई आर न पारे ॥

४. तीर्थ शिवोम् सुनो हे काहना, शरण तुम्हारी आई ।
तू ही प्रियतम साजन मन का, तू ही पार उतारे ।

(१०५) बंधु सहायक मित्र सब हैं बारी बारी चल दिए

१. बंधु सहायक मित्र सब हैं, बारी बारी चल दिए।
कुछ जा चुके कुछ जा रहे, बस सबके मुंह लटका किए ॥
२. तुम भी रहो तैयार अब, जाने की बारी है तेरी ।
करना था जो भी कर लिया, अपने लिए घर के लिए ।।
३.यह तो जग की रीत है, आया सो इक दिन जाएगा।
यह जगत न घर किसी का, रह लिए जब तक जिए ।।
४. जो लगाए मन यहां पर, वह तो दुख ही पाए है।
जो न समझे जग को अपना, वह चला खुशियां लिए ।।
५. जाने की बेला आ गई, जाना पड़ेगा ही तुझे ।
टाल सकता है कोई न, कितनी भी ताकत लिए ।।
६. मैं रहा शिवोम् समझाए, भजन कर ले राम का ।
जो समय है पास तेरे, न गवा दुनिया लिए ।।

(१०६) संतों ! समझ लेओ मन माहीं

१. संतों ! समझ लेओ मन माहीं ।
यह जग है सपने की नाई, लीन भए छिन माहीं ॥

२. महल बनाए ऊंची अटरिया, ता को बहुत सजायो ।
काल गति में ठहर न पायो, उजड़ जाए पल माहीं ॥

३. धन दारा परिवार के पीछे, जीवन सभी गवाया ।
कुछ भी हाथ न आयो तेरे, विरथा तू भरमाहीं ॥

४. तीर्थ शिवोम् रहा समझाए, अब भी बिगड़ो नाहीं ।
राम भजन कर कृष्ण मुरारे, तारे छिन के माहीं ॥

(१०७) शरण पड़ी को राख लेओ प्रभु मोरे

१. शरण पड़ी को राख लेओ प्रभु मोरे ।
मोहे तारत क्या जावत है, कुछ न बिगड़ता तोरे ॥
२. मोरे प्रभुजी मोरे प्रियतम, अर्ज करूं मैं तोहे ।
अब की बेर सम्भालो मुझको, पाओ पड़त हूं तोरे ॥
३.मैं पापिन जग विषयन लिपटी, कर्म कुकर्म न जानूं ।
एक भरोसा तुमरो साजन, आन पड़ी दर तोरे ॥
४. कुछ न समझूं राम भजन मैं, भोगत शिथिल भई मैं ।
अब तो आन बचाओ मोहे, दर्शन कब हों तोरे ॥
५. जब जब भक्तन भीर पड़त है, करत कृपा हे प्रभुजी ।
मोरी वेर निहारत नाहीं, कौन भूल भई मोरे ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, बार बार सिर रगड़ूं ।
आन संभालो, आन बचाओ, तुम बिन को नहीं मोरे।।

(१०८) मोरी उमरिया बीतत जात रही

१. मोरी उमरिया बीतत जात रही ।
जैसे पात झरें तरुवर सों, वैसे आयु जात रही ॥
२.आया सावन, बीता सावन, वर्षा नाहीं बरसी ।
सूखे काठ की नाईं जीवन, ऐसे आयु जात रही ॥
३. कुछ भी लाभ कमाया नाहीं, लोभ मोह में उलझा ।
गई जवानी, बीता जीवन, अब तो आयु जात रही ।
४. भया काग की भाँति मनवा, मैले को ही धाए ।
विषयन के विष रमता रहता, विरथा आयु जात रही ॥
५. आयु बीती, बीत चली है, मनवा विषयन माहीं ।
अब हों मूरख चेते नाहीं, जबकि आयु जात रही ॥
६. तीर्थ शिवोम् तुझे समझाऊं, पर तू समझत नाहीं ।
विरथा जीवन काहे गवावे, यह आयु तो जात रही ॥

(१०९) सतिगुरु किरपा अजब निराली

१. सतिगुरु किरपा अजब निराली, रंग अपने रंग लैंदी ए ।
रंग गहरा है छुट्दा नाही, प्रेम रंग रंग दें दी ए ॥
२.सतिगुरुजी दी शक्ति न्यारी, प्रेम प्रभु मन भर देवे ।
तरह तरह दे खेल वरबावे, अन्दर बाहर रंग दें दी ए ॥
३. मन ते मस्ती छाई हरदम, मंशा टुट न जांदा ए ।
सारे जग विच रब ही दिस्से, ए हालत कर दें दी ए ॥
४. मन विच थिरता आवे ऐसी, दूजे मन जांदा नाहीं ।
अन्दर अन्दर ही सुख जाणे, सुख अंदर भर दें दी ए ॥
५. अन्दर नाद ते अन्दरी चालन, राहीं गरु दे होंदा है ।
रंग रंग दे दिखन नजारे, शक्ति चालन कर दें दी ए ॥
६. बाहर रब नूं लभदा फिरदा, अन्दर चाती पावे न ।
तीर्थ शिवोम् जे किरपा होवे, अन्दर रब्बा वरबांदी ए ॥

(११०) हे प्रभु ! मन वाणी से दूर

१. हे प्रभु ! मन वाणी से दूर ।
कैसे पहुंचूंगा मैं तुम तक, माया में भरपूर ॥
२. तुम सर्वत्र समाना सुआमी, कर्ता भर्ता हर्ता ।
नाहीं तुम बिन दूजा कोई, तुमरा ही सब नूर ॥
३. जीव बना माया में अंधा, जग विषयन को जाने ।
भूल रहा जीवन का दाता, देखत नहीं हजूर ॥
आना चाहूं तुमरे द्वारे, जगत है बाधक भारी ।
कठिन चढाई तुमरे घर की, पाओ में नासूर ॥
५. तुम ही दाता खेवन हारे, राह दिखाओ मो को ।
तम ही तम है छाया जग में, कब देखूं पुरनूर ॥
६. तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभुजी, अब तो पार कराओ ।
एक भरोसा तुम ही प्रियतम, करे व्यथा जो दूर ।।

(१११) प्रभु तुम कारण जगत पसारा

१. प्रभु तुम कारण जगत पसारा ।
जगत अखण्ड बनाए तुमहि, कोई आर न पारा ॥
२.एक तुम्हीं ऐसे निर्माता, जा अभिमान न व्यापे ।
प्रति पालक रक्षक सब ही के, किया सकल उजियारा ॥
३. मैं अविवेकी लोभी मोही, तुमको देख न पाऊं,
कण कण व्यापक तुम हो प्रभुजी, पर मैं हूं लाचार ।।
४.माया ठगनी मो भरमावे, अन्तर छाये रही जो ।
कैसे मैं आवरण हटाऊँ, दर्शन करूँ तुम्हारा ॥
५.मैं तो कछु भी समझन पाऊँ, माया नगरी न्यारी ।
मन ललचावे, जगत बचावे, नहीं बचावन हारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् पड़ा है शरणी, अब तो लाज बचाओ ।
डूब रहा हूं भव जल माहीं, दीखत नहीं किनारा ॥

(११२) निद्रा तृष्णा छूटत नाहीं

१. निद्रा तृष्णा छूटत नाहीं, तब लागि जग के माहीं।
छूटन चाहे जग विषयन से, माया छूटत नाहीं॥
२. जग जंजाल बना है ऐसा, मनवा ता में घूमत।
नाना रूप बनावे ठगनी, थकत रही वह नाहीं।
३. माया काया मन भरमाया, अनुपम खेल रचाया।
वा की पकड़ अनोखी देखी, कोई छूटत नाहीं॥
४. योगी तपसी जानी हारे, हार गये भक्तन भी।
मन का पार किसे न पाया, उतरत पार है नाहीं॥
५. मीठी लागे निद्रा रानी, तृष्णा मन भटकावे।
भटकत जीव जगत के माही, माया छोड़त नाहीं।
६. तीर्थ शिवोम् थका मैं हारा, मन भरमावत मोहे।
कैसे पाऊं दर्शन प्रभुजी, समझ में आवत नाहीं॥

(११३) काया मोहित ऐसा मनवा

१.काया मोहित ऐसा मनवा, मरना नाही चाहे।
व्याधि दुखी अशक्त हो कितना, फिर भी जीना चाहे॥
२.जगत भोग में ऐसा रमया, ता में ही सुख माने।
काया सदा सदा ही जग है, सदा सुखों को चाहे॥
३. कितना भी समझाओ मन को, विषयन ही को धावे।
प्रभु मारग अपनावत नाहीं, आतम सुख नहीं चाहे॥
४. पर यह जग है रैन बसेरा, नित्य रहे न कोई।
जाना तो इक दिन है सबको, चाहे या न चाहे।
५. संतन रहे पुकारे तुम्हें मन, हरि सिमरन में लागो।
हरि सिमरन ही एक उपाय, जो जग छूटन चाहे॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवंता, तुम ही एक सहारा।
मन तो लागा जग में ऐसा, छोड़न भोग न चाहे॥

(११४) कोई न लीला तेरी जाने

१. कोई न लीला तेरी जाने ।
कब किससे क्या करे करावे, कोई यह क्या जाने ॥
२.जन्म मृत्यु और बंधन मुक्ति, सब माया है प्रभु की ।
हर्ष शोक और भय को मानव, विरथा अपना माने ।।
३. जीव है मानत कबहूं नाहीं, यह सब इच्छा तेरी ।
भूला फिर अहम् में ऐसा, अपना ही सब जाने ॥
४. जीव भ्रमित अज्ञान निरन्तर, युगों युगों से आया।
हटे कभी अज्ञान का परदा, कब तुझको वह जाने ।
५. उताल तरंगे भावों की हैं, व्यथित हृदय हैं करती ।
अब तो खोलो पाट प्रभुजी, कब तक फिरे अजानें ॥
६. तीर्थ शिवोम् तुम्हारी लीला, समझे बैठा माया ।
अब तो कृपा करो है हरिहर, दुखड़ा कोई न जाने ॥

(११५) कामना यही है मन में

१.कामना यही है मन में, कामना कोई न हो ।
जैसा रक्खे राम मेरा, सुख उसी हालत में हो ।।
२. होकर समर्पित राम को, आदेश का पालन करूं ।
अच्छा बुरा कुछ भी न हो, आशा किसी से कुछ न हो ॥
३. मैं करूं सेवा सभी की, समझ सेवा राम की ।
देह अपनी के लिये तो, पास में कुछ भी न हो ॥
४.भजन में मन को लगाकर, नाम सिमरन मैं करूं ।
खुश रहूं हर हाल में गम का निशां कोई न हो ॥
मान और अपमान को सम, मान कर व्यवहार में ।
देखूं प्रभु व्यापक सभी में, वासना कोई न हो ।
६. शिवओम् हे मेरे प्रभु, यह कामना पूरी करो ।
निष्काम होकर जगत में, इच्छा कोई जग की न हो।।

(११६) जब तक श्वासों में अहम बना

१. जब तक श्वासों में अहम बना, तब तक मृत्यु है पास खड़ी ।
हैं जितने श्वास निकल जाते, पास आती जाती घड़ी घड़ी ।।
२. है जीव समझ पाता जब ही, है श्वांस प्रभु की शक्ति के ।
जाता है निकल अहम् उसका, मृत्यु न रहती पास खड़ी ॥
३.कहते हैं प्राण यह वायु है, पर यह तो केवल कथनी है।
है किरिया भगवती अम्बा की, जो हरदम रहती साथ खड़ी ॥
४.है हाथों, पाओं, आखों में, शक्ति ही सब है काम करे ।
मन में बुद्धि में, वाणी में, ईश्वर की शक्ति आप खड़ी ।।
५.मिथ्या अभिमान करे प्राणी, फिर दुख भी वह ही पाता है ।
जब गलित हुआ अभिमान तभी, तब पाता हरदम साथ खड़ी ॥
६. है तीर्थ शिवोम् समझ पाया, यह श्वास तो मेरे श्वांस नहीं ।
अब तक अभिमान किया विरथा, न समझा शक्ति पास खड़ी ॥

(११७) देवासुर संग्राम देह में चलत निरन्तर हर पल

१. देवासुर संग्राम देह में चलत निरन्तर हर पल ।
नाही रुकता चालू रहता, होता रहता हर पल ॥
२. देव बनी है शुभ वृतियाँ, चंचल असुर बनी हैं।
इक पल शान्त नहीं मन माहीं, रहत लड़त है हर पल ॥
३. चंचल करें विरोध शुभ का, शुभ चंचल संहारें ।
ऐसे ही यह चलता रहता, करे उपद्रव हर पल ॥
४. बन्द करों संहार प्रभु, यह युद्ध विराम घटित हो ।
देवों का हो राज देश में, रहे शान्त ही हर पल ॥
५. सत गुण् होत प्रधान चित्त में, किरपा तुमरी होती ।
रज तम जायें सर्वनाश को, सत्य प्रभावी हर पल ॥
६. तीर्थ शिवोम् पुकारूं, गुरुवर परगट अन्तर माहीं ।
अन्तर होए संग्राम निरन्तर बरसे सुख है हर पल ।।

(११८) राम भजन ही सुन्दरताई

१. राम भजन ही सुन्दरताई ।
जग में लगि कर काहे तूने, अपनी नाक कटाई ॥
२. जग जंजाल अनूठी माया, भ्रमित करे जीवों को ।
अपना आप गंवाया ऐसा, कौन करे भरपाई ॥
३. भोग वासना मिथ्याचारी, भागत आगे आगे ।
पीछे पीछे धावत मनवा, हाथ कबहूं न आई ॥
४. राम जपन में सुख ही सुख है, भावे जो पावै ।
मस्त रहे है मनवा ताही, मन आनन्द समाई ॥
५. मनवा उठो ! भजन में लगो, काहे जग भरमाया ।
राम भजन श्रृंगार करो मन, तो ही मिले बड़ाई ।।
६. तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, विरथा समय गवाए।
सुन्दर राम भजन है सुन्दर, सुन्दर ही प्रभुताई ॥

(११९) तेरा अन्तर मन है मैला

१. तेरा अन्तर मन है मैला, तू बाहर फिरे उदासी ।
है जगत वासना भारी, तू काहे का संन्यासी ॥
२.बैराग थिति तो मन की है, वह तो जग की नाहीं ।
जब अन्तर राग नहीं है, तब होवे रहत उदासी ॥
३.है राग जगत का कारण, मन राग मलीन करे है ।
है द्वेष इसी से होता, मन राग, तू नहीं उदासी ॥
४. तू छोड़ जगत की माया, मन वश में कर तू अपना ।
तब तेरा भाग खुलेगा, तब होवेगा संन्यासी ॥
५.शिवओम् तुझे समझाए, यह भेद की बात बताए ।
बिन भजन राग न जाए, है रामहि करे उदासी ॥

(१२०) मोहन मिलसी कौन गली

१. मोहन मिलसी कौन गली ।
नित्य मनोहर वंशी बाजे, लागत अति भली ॥
२. मैं हूं पापिन दुष्टाचारी, श्याम से नेह घना है।
श्याम नाम हो निर्मल मनवा, जग तज शाम चली ॥
३. श्याम गली आनन्द विराजे, गोपिन रास रचावे ।
छनक छनक पग धरता सुन्दर, दुविधा सभी टली ॥
४. मन में हरदम श्याम समाया, जग में मन न लागे ।
मनवा तड़पे नयनां रिमझिम, खोजन श्याम चली ॥
५. कोई संत बताओ मोहे, मारग श्याम गली का ।
जहां सुशोभे प्रियतम मोरा, वह ही गली भली ॥
६. तीर्थ शिवोम् श्याम दीवानी, श्याम बिना न सूझे
श्याम मिले मनवा हो शीतल, विपदा सकल टली ॥

(१२१) गुरुजी, अंतर दर्शन दीजो

१. गुरुजी, अंतर दर्शन दीजो ।
अंतर में तम छाया गहरा, सकल उजाला कीजो ।।
२.तुम नाशक पापन मन माहीं, कृपाशील हो सुआमी ।
मैं तो पाप हटा न पाऊँ, मन को निर्मल कीजो ॥
३.अंतर हो आलोकित प्रभुजी, अपना रूप दिखाओ ।
कृपा बिना हो दर्शन नाहीं, अमृत रूप बहाजो |
४.मैं अभिमानी कुटिल कुकर्मी, साधन ज्ञान अजाना ।
थामो हाथ मेरा हे प्रियतम, डूबत जात पसीजो ॥
५.तुम ही साधक, साध्य तुम्हीं हो, तुम हो अपरम्पारा ।
मैं निर्लज्ज जगत का कामी, साधन तुम्हीं करीजो ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण हूँ गुरु जी, व्यापक अंतर्यामी ।
शरण पड़े की लाज तुम्हीं हो, अपनी विरद रखीजो ।।

(१२२) जा राम बिसर है जाता

१. जा राम बिसर है जाता, ता विघ्न होत अति भारी।
तब रोवत है सिर धुन धुन, होवत है बहुत ख्वारी॥
२. वह ही दिन होता सुन्दर, जब प्रियतम दर्शन होता।
जब राम निरन्तर मन में, आनन्द होत मन भारी।।
३. कामादिक शत्रु सारे, बलवान कुटिल हैं तीखे।
जा चंचलता मन माहीं, दुख देत अति ही भारी।।
४. मन देत पटखनी सबको, त्यागी ज्ञानी हो योगी।
बस नाम ही एक सहारा, सुख देत अति ही भारी॥
५. गुण अन्दर सकल जगत है, है बाहर गुण न कोई।
माया आवरण हटे न, कैसा भी श्रम हो भारी।
६. है तीर्थ शिवोम् शरण में, प्रभु आया तुमरे द्वारे।
नीच घमण्डी पापी, है विपद पड़ी अति भारी।।

(१२३) विनति सतिगुरु देव प्रभु से

१. विनति सतिगुरु देव प्रभु से, दुख भंजक अघनाशक।
कृपा करो हे मेरे गुरुवर, भव का रोग विनाशक।।
२. शरणागत हूं, चरण पड़ा हूं, हीन दीन अति भारी।
मन चंचल विषयों के माहीं, तुम हो ज्ञान प्रकाशक।।
३. पापी पाखण्डी लोभी हूं, ठगत फिरूं जग सारा।
धर्म अधर्म विचार नहीं मन, हे सर्वस्व प्रकाशक।।
४. फिरता आवागमन चक्र में, थिरता पल भर नाहीं।
कैसे सिमरूं नाम प्रभु का, प्रणतपाल दुख नाशक।
५. मन्द मति मैं तुच्छ जीव हूँ, ज्ञान भजन न जानूं।
मनवा जग भोगों में जावे, बनकर सुख का नाशक।।
६. तीर्थ शिवोम् कृपा हे सतिगुरु, अपनी विरद संभालो।
करो उजाला अंतर मन में, रज तम के तुम नाशक।।

(१२४) राम है अपरम्पारा

१.राम है अपरम्पारा ।
होकर सर्व व्यापक सब में, फिर भी सबसे न्यारा ॥
२.जल थल नभ में वह ही बैठा, कण कण माही बसे वह ।
सारा जग है उसके अन्दर, मिथ्या सकल पसारा ।।
३.माया नगरी जीव भ्रमित है, है अभिमान वह डूबा ।
जो वह नाही, है वह बनता, भूला जगत असारा ॥
४.कैसे टूटे भीत यह माया, बिना गुरु के नाहीं ।
गुरु कृपा भ्रम काटनहारी, निर्मल होय विचारा ।।
५.गुरु ही साधन, गुरु प्रदाता, गुरु ही साध्य बना है।
राम ही रूप गुरु का धारे, पार करावन हारा ।।
६.तीर्थ शिवोम् कृपा रघुवीरा, शरण तिहारी आया।
गुरु रूप धर पार उतारो, छूटे जगत पसारा ॥

(१२५) राम भजन कर

१.राम भजन कर, राम भजन कर, राम भजन करले मनवा ।
राम भजन ही सुख का दाता, राम भजन तेरा धनवा ॥
२.काहे है तू जग में भूला, काहे जनम वृथा करता ।
काहे न इस बात को समझे, राम भजन तेरा धनवा ॥
३.क्यों तू है अभिमान में डूबा, क्यों तू कर्म करे संचय ।
क्यों तू ध्यान इधर न देता, राम भजन तेरा धनवा ॥
४.आया था तू राम भजन को, आया शुभ कमाने को ।
आया फिर तू भूल गया है, राम भजन तेरा धनवा ॥
५.समझ ले जीवन आवन जावन, जगत बना है मन भरमावन ।
समझले मन में बात सत्य है, राम भजन तेरा धनवा ।।
६.तीर्थ शिवोम् राम ही साथी, हर दम करत वही राखी ।
राम भजन को छोड़ क्यों, तू राम भजन तेरा धनवा ॥

(१२६) अन्तर जल में गहरे उतरत जाये

१.अन्तर जल में गहरे उतरत जाये ।
उच्च आकाशे सिर वह काढ़े, मोती पकड़त पाए ।
अन्तर मन ही गहरा जल है, डुबकी वहां लगाए।
आशा तृष्णा त्याग जगत की, घर में रहा समाए ।।
३. घर में मोती, घर में सुख है, घर आनंद घना है।
घर ही है आकाश अनन्ता, व्यापक दृष्टि पाए ।।
४. वन पर्वत सागर घर माही, सूरज चंदा तारे ।
घर में ही है सकल समाया, घर अमृत बरसाए ।
५.घर में झांके घर में देखे, घर ठहरे विश्राम करे ।
घर में जाये भूल जगत को, घर में ही सुख पाए ।
६.तीर्थ शिवोम् चलो घर माहीं, घर ही तेरा घर है।
घर को त्याग, भटक न जग में, काहे मन भर पाए ।।

(१२७) राम ही मन में

१. राम ही मन में, राम ही तन में, रोम रोम वह बसता है।
राम बिना जीवन है नाही, राम ही रोता हंसता है ।।
२. राम की सारी लीला माया, राम जगत उपजाता है।
राम ही व्यापक सर्व जगत में, कण कण माही बसता है ।।
३.जहां नहीं कुछ राम वहां है, कुछ भी जहां है राम वहां ।
दिखे कहीं भी, कहीं दिखे न, राम तो हर दम बसता है ।।
४.जगत नहीं था, राम तभी था, जगत प्रकट है राम तभी ।
जगत न होगा, राम रहेगा, तीनों कालों बसता है ।।
५. ऐसा राम जीव न देखे, यह माया भी उसकी है ।
राम कृपा हो, राम दिखे तब, हर पल, जगह वह बसता है ।।
६. तीर्थ शिवोम् शरण में आया, कृपा तुम्हारी मुझ पर भी ।
देखूं राम पिया को मैं भी, अन्तर बाहर बसता है ।।

(१२८) जो दिन निकला डूब गया वह

१. जो दिन निकला डूब गया वह, फूल खिला मुरझाया।
जन्म लिया जो मृत्यु आई, यह विधि खेल रचाया ।।
२. जो फल उपजा डाल के ऊपर, इक दिन गिरता नीचे ।
नगर बसा सो उजड़ गया, फिर हर योवन कुम्हलाया ।।
३. जीव जगत में पसरा ऐसे, जैसे सदा ही रहना ।
भूल गया दिन जावन का वह, देख जगत ललचाया ।।
४. भूल गया वह हो मतवाला, कर अभिमान घनेरा ।
धर्म अधर्म विचार करे न, विषयन में भरमाया ॥
५. बीता जीवन बीती आयु, बेला आई चलन की।
अब क्या होगा समझ न पाए, हाथ मले पछताया ॥
६. तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, पहले क्यों न समझा ।
अब जो अवसर बीत गया है, जो मन में घबराया ॥

(१२९) सुख में बीता

१. सुख में बीता, दुख में बीता, मेरा जीवन बीत गया।
सुख-दुख से अतीत न बीता, सुख दुख में ही बीत गया ।।
२. रहा तड़पता जीवन भर ही, मैं आनंद के पाने को ।
पर आनंद मिला न मुझको, बिन आनन्द ही बीत गया ॥
३. कोई उलझन, कोई मुश्किल, हर दम रहती पास मेरे ।
चैन से मैं सो भी न पाया, उलझन में ही बीत गया ॥
४. प्रभु भजन को समय नहीं है, यही सोचता कहता मैं।
काल बली सिर पर आ धमका, देखा जीवन बीत गया ।
५.फिर भी जग तो छूट न पाया, राम भजन भी न कीना ।
लगा रहा जग ही के माही, समय था वह भी बीत गया ।
६. तीर्थ शिवोम् करूं मैं काय, कुछ कुछ भी सूझ नही पाता ।
अवसर एक मिला था वह भी,हाथ में आकर बीत गया ।।

(१३०) सदगुरु देव कृपा भई ऐसी

१. सदगुरु देव कृपा भई ऐसी, अनुपम रूप दिखाया।
नाद दृश्य और दिव्य क्रिया का, अनुभव खूब कराया ।।
२. मनवा लीन भया अन्तर में, अपने में ही लागा।
माया भीत हटी है जैसे, बादल ठहर न पाया ।।
३. गुरु शक्ति है चढ़ी गगन में, छूटा जगत पसारा ।
अन्तर में आनंद समाया, गौण हुआ दुख काया ।।
४. विषय वासना जब हो सन्मुख, मनवा वहां न डोले ।
बना रहे थिर अन्तर में ही, नाहीं वह ललचाया ॥
५.अब है चिन्ता शोक न कोई, मान नही अपमाना ।
है हर दम मस्त बना है मनवा, अनत प्रकाश दिखाया ।।
६. तीर्थ शिवोम् हे मेरे सद्गुरु, शरण रहूं नित तेरी ।
मोह मिटा कर. जग तृष्णा का, काटी माया काया ।।

(१३१) बातें करना काम जगत का

१. बातें करना काम जगत का, जग तो बातें करता है ।
भला बुरा बिन सोचे समझे. वह तो ऊंगली धरता है ।।
२. सेवा करे जगत की जो भी, वह अतीव दुख पाता है ।
सेवक से सेवा भी ले, बदनाम भी उसको करता है ।।
३. सेवक, समझ प्रभु की सेवा, सेवा जग की करता है ।
दुख सहने का मन अपना कर पग सेवा में धरता है ।।
४.साधन सेवा सेवा सेवा, सेवामय जीवन जिसका ।
वह ही है आनन्द भी पाता, जन्में नहीं न मरता है ।।
५.जग करता है तो करने दे जितनी जैसी बाते कर ले।
सच्चे मारग पर चलता रह, जग तो ऐसे ही करता है ।।
६.जो वीर पुरुष होते जग में, जग पीछे लेकर चलते हैं।
जग पीछे कभी न चलते वह, जग अधोगति को चलता है ।।
७. तीर्थ शिवोम् समझले मन में, मारग कल्याण पकड़ ले तू ।
फिर जग की चिंता कौन करे, वह तो मिथ्या ही बनता है ।।

(१३२) देखते ही देखते

१. देखते ही देखते, जीवन निकलता ही गया।
मैं रहा आँसू बहाता वह फिसलता ही गया ।।
२.मान और अपमान में ही, मैं सिसक कर रह गया।
जब उधर देखा तो जीवन था, पिघलता ही गया ॥
३.हाथ से अपना कलेजा थाम कर, मैं रह गया।
अब नहीं आने का वापिस, जो निकलता ही गया ।
४. कुछ समझ आई न मुझको, क्या कहूं, किससे कहूं ।
जिस पह रखा आसरा था, वह तो हिलता ही गया ।।
५.अब कहां जाऊं, कहां पूछू कहां, पाऊं जगह ।
था बनाया घर जहां वह, वह खिसकता ही गया ।
६.अब छुपाऊं सिर कहां पर, मैं तो बेदर हो गया।
जिसको समझा दर था अपना, वह तो जलता ही गया ।
७अब रहा शिव ओम् पछताए, लजाए जा रहा ।
अब कलेजा मुंह को आता, जो था खलता ही गया ॥

(१३३) मदारी कैसा खेल दिखाया

१.मदारी कैसा खेल दिखाया ।
था कुछ नाहीं, दिखाए दीना, जग को है भरमाया ।।
२. वन पर्वत दिखाया सागर, रात खिलाए तारे ।
दिन को चमके सूरज सिर पह, कैसा जगत बसाया ।।
३. देख देख कर माया प्रभु की, चकित जीव है होता ।
वह ललचाए देख विषय को, मनवा हटा न पाया ।।
४. हुआ भ्रमित वह जगत, निरन्तर सुध बुध भूल गया वह ।
सुख के पीछे धावत वह नित, पर सुख हाथ न आया ।।
५.आयु बीती, सुख के पीछे, धावत धावत धावत ।
पर सुख तो आगे ही आगे, धावत पीछे माया ॥
६. तीर्थ शिवोम् है विनति मोरी, अब तो धावत हारा।
अपनी माया आप समेटो, थक हारा, घबराया ॥

(१३४) तू जग में क्यों बौराया

१. तू जग में क्यों बौराया, काहे इसमें भरमाया ।
क्यों मनवा बना अयाना, काहे तू समझ न पाया ।।
२. यह जग स्वारथ का है रे, डूबा हंकार में है रे ।
अपना न कोई यहां रे, अपना सब समझ पराया ॥
३. क्यों विषयों पीछे भागे, जब भूख तुझे है लागे ।
न सोचे पीछे आगे, भोगों में तू ललचाया ॥
४. सुख विषयन में तो नाही, है त्याग में भी सुख नाहीं ।
सुख राम भजन के माहीं, यह बात तू समझ न पाया ॥
५. कर्तव्य करन को जग है, न मोह करन को जग ।
माया का खेल यह जग है, संतों ने यह समझाया ।।
६. है तीर्थ शिवोम् कहे मन, क्यों मोह पड़ा तू हे मन ।
कर राम भजन तू हे मन, है राम ही पार कराया ।।

(१३५) मनवा, जग में नाहीं लागे

१. मनवा, जग में नाहीं लागे ।
तड़पत हरदम राम मिलन को, सिमरन सोये जागे ॥
२. जग जंजाल दिखे है मोहे, है मन मोह न इसका ।
सुख भोगों को त्याग दिया है, तोड़े बंधन तागे ॥
३. राम मिलन को व्याकुल मनवा, बना ही हर पल रहता ।
अच्छा लागे राम बिना न, रामहिं रहता लागे ॥
४.वन में देखत मोर हं नाचत, सागर लहरें जब मैं।
फूल निहारत भाँति भाँति, भूख दरस की जागे ॥
५.लागा तीर कलेजे माहीं, प्रेम पिया विरह का ।
आकुल व्याकुल हुई बावरी, अन्दर पीरा जागे ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो रघुवीरा, दर्शन आए दीजो ।
पल पल छिन छिन बनी वियोगिन, नैन भी दूखन लागे ॥

(१३६) जीव को यह जग अनोखा

१.जीव को यह जग अनोखा, भा गया है भा गया ।
वक्त चलने का तो अब है आ गया है आ गया ।।
२.काल ने देखा निरन्तर, पर कहा कुछ न तुझे ।
अब पकड़ने का समय भी, आ गया है आ गया ।।
३. जो किया मन में था तेरे, जो किया अच्छा बुरा ॥
वक्त लेखे का है आया, आ गया है आ गया ।।
४. तू रहा आसक्त जग में, मोह चिपकाए हुए ।
त्यागने का वक्त जग को, आ गया है आ गया ॥
५.मन मसोसे है तू घबराए, है पछताये रहा।
भुगत अब तू अब बुलावा, आ गया है आ गया ।।
६.हाथ मलता रह गया है, अन्त में शिवओम तू।
भयानक बन यह कलुआ, आ गया है आ गया ।।

(१३७) माया जो कुछ करे सो कम है

१.माया जो कुछ करे सो कम है ।
अनहोनी को होनी कर दे, सत को करे वह तम है ।।
२. जहां नही जल, जल दिखलाये, आशा करत निराशा ।
बिना दृश्य ही दे दिखलाये, खुशियां करे वह गम है ।।
३.आवागमन चक्र घूमता, जन्माए मरवाए।
इसी तरह यह चलता रहता, आती बन कर यम है ।
४. मन हंकार भरे वह मिथ्या, जीव रहे जग भूला ।
लेत लपेट सभन जीवों को, करत आँख को नम है।।
५.रूप मनोहर धरती माया, मन मोहक मन भावन ।
थिरता की वह शत्रु बनती, गिरती हो कर बम ।।
६. तीर्थ शिवोम् सुनो है माया, किरपा मो पर राखो ।
तुमरा पार सकूं मैं पाए, इतना नाहीं दम है।।

(१३८) जगत प्रपंच में उलझी ऐसी

१. जगत प्रपंच में उलझी ऐसी, भूली प्राण पिया को ।
वश में मैं रख के न पाई, इस अनजान जिया को ॥
२. उलझी उलझी उलझ गई, मैं दल दल माही फंसी ।
गले गले माया में उतरी, याद न रही पिया की ॥
३.अब जो रूप जगत दिखलाया, याद पीव की आई।
पीव दरस की भूख जगी, तब मिलने चली पिया को ।।
४. कैसे रीझे प्राण पियारा, कैसे मुख दिखलाए।
कैसे मिटे वासना मेरी, कैसे प्रकट पिया हो ॥
५. करुं श्रृंगार हृदय में अपना सतगुण आभूषण से ।
प्रिय लागूं मैं पीव को अपने, पाऊं प्राण पिया को ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो हे सजनी, कर श्रृंगार तू अपना ।
प्रियतम आए, तुझे मनाए, पाए प्राण पिया को ।

(१३९) मन भावन हरियाली छाई

१. मन भावन हरियाली छाई, दोनों और सड़क के है ।
शीतल छाया मुझे बुलाए, प्यारी लगे जो मन को है ।।
२. छाया से क्या लेना देना, मारग अपने जाना है ।
शीतल छाया, बैठ गया जो, होती बाधक पथ की है ।।
३. निर्धारित जो किया लक्ष्य है, सीधे उस पह जाना है।
मारग भोगों में उलझाती, लक्ष्य दूर ही करती है ॥
४. जा उलझा सिद्धि साधन की, वह तो फस ही जाता ।
साधन वीथि चले निरन्तर, सीधे लक्ष्य पर जाती ।।
५. सिद्धि तो है जग की सिद्धि, लगती अति लुभावन है ।
मन हंकार करे वह पैदा, तब बाधक बन जाती है ।।
६. तीर्थ शिवोम हे प्यारे, साधन पथ अपने पर लगा ।
सिद्धि तो हैं भोग जगत के, गली पीव घर जाती है ।।

(१४०) उड़ी पतंग गगन में ऊपर

१. उड़ी पतंग गगन में ऊपर, जग है ओझल होया ।
आशा तृष्णा दूर हुई सब, आपा मन का खोया ।।
२. मनवा अब आनन्द मगन है, शोक मोह कछु नाही ।
अनत आकाशे रमन करे वह, आतम माही डुबोया ।।
३. इन्द्रिन रोएं कहां गयो मन, हम अनाथ है कीना ।
मनवा तो सुख मांही विराजे, आतम रूप है होया ।
४. टूटी सीमा बंधन टूटे, छूटे, मित्र पराए ।
अब काहे का मेरा तेरा, जग जंजाल है खोया ।।
५.यह किरपा सद्गुरु ने कीनी, चेतन अन्तर कीना ।
मन निर्मलता जब मैं पाई, तब मन भ्रम मैं खोया ॥
६. तीर्थ शिवोम् मिला सद्गुरु से, सद्गुरु रूप है धारा ।
बूंद मिली जब सागर माहीं, सीमित रूप है खोया ।।

(१४१) मनवा चलो पिया के देश

१. मनवा चलो पिया के देश ।
जहां सूरज न अगन न पानी, नाहीं कोई कलेश ॥
२. पिया तेरा परमेश्वर साईं, पालन करता जग का । .
अनत अखण्ड का स्वामी होकर, क्यों बनता दरवेश ।।
३. चलो पिया घर, तेरा घर जो, घर में ही सुख व्यापे ।
क्यों तू चंचल जग में भटके, मान यही उपदेश ।।
४.माया काया भ्रम फैलाया, तू भ्रम माहीं डूबा।
छोड़ जगत की माया तृष्णा भज ले राम महेश ॥
५.पिया के घर में को भ्रम नाहीं, नाहीं तृष्णा व्यापे ।
काशी वही, अयोध्या मधुरा, वह देशों का देश ।।
६. तीर्थ शिवोम् चलो घर पी के, पी है तुम्हे बुलाये ।
पी को छोड़ कहां है जाना, सुख न होता शेष ॥

(१४२) मनवा क्यों तू पाप कमाए

१.मनवा क्यों तु पाप कमाए ।

कर्म करे तु मोही होकर, नाहीं तू पछाताए ॥

२. तू जाने जग नित्य रहेगा, नित्य ही भोग रहेंगे ।

नित्य ही तू भोगे भोगन को, मृत्यु जान न पावे ॥

३.जग है चार दिनों का मेला, थिर न कुछ भी रहता ।

आज दिखे कल दीखत नाही, प्रगटे, लय हो जाये ॥

४.मेरा मेरा क्यों तू करता, तेरा नहीं है कुछ भी ।

मेरा तेरा जग की माया, जग छोड़ उड़ जाये ।।

५.कर ले नेक कमाई मनवा, पास समय जो तेरे ।

खाली हाथ तू आया जग में, खाली हाथ तू जाये ।।

६.तीर्थ शिवोम् समझले मनवा, यहां सदा न रहना ।

आए, जाए, फिर आ जाए, फिर काहे भरमाए ।।

(१४३) रात भयानक

१. रात भयानक, बीतत नाहीं, साजन पास न मेरे ।
मनवा मेरा घबरावत है, चैन बिना न तेरे ॥
२. जब से बिछड़ा प्रियतम मोरा, रोवत हूं दिन राती ।
कब आवेगा, मिलेगा मोहे, कब हूं पास मैं तेरे ॥
३. सूनी सेज पिया बिन मेरी, नयनन राह निहारे ।
अजहूं साजन आयो नाही, जतन किए बहुतेरे ।।
४. कोई बताए मोहे मारग कैसे पीव मिलेगा ।
रोवत तड़पत जीवन बीता, मन में चाव घनेरे ॥
५.अब तो धीरज जाये रहा है, आशा निराश में बदली।
काय करूं मन लागत नाही, पड़ी हूं बीच अंधेरे ।।
६. तीरथ शिवोम् हे मेरे सजना, क्यों मैं नेह लगाया।
तुम तो निष्ठुर सुनत हो नाही, मैं मरती बिन तेरे ॥

(१४४) दूर देश जा बैठे प्रियतम

१. दूर देश जा बैठे प्रियतम, मैं नित राह निहारूँ ।
राह निहारत थाके नयनां, हरदम तुम्हें पुकारूं ॥
२.हिरदय भाव लिए हूं तेरे, नयनन तुम्ही समाए ।
श्वास-श्वास आवाज़ तेरी ही, मन में तुम्हें विचारूं ।।
३. ऊठत बैठत सिमरन तेरा, नाम की माला फेरूं ।
कब आवेगा प्रियतम प्यारा, हर पल यही विचारूँ ॥
४. तेरी बात करूं, हर इक से, तेरे ही गुण गाती ।
तेरे बिन चर्चा न दूजी, नित उठ राह बुहारूं ।।
५.मेरे प्रियतम कृपा करो अब, हर दम तुम्हें बुलाती ।
अब तो वेग करो आवन की, तन मन तो पह वारूं ।
६. तीर्थ शिवोम् हे मेरे साजन, मैं तो तुमरी दासी ।
दासी को अपना लो प्रियतम, मन में तुम्हें ही धारूं ॥

(१४५) तुम में लागा मनवा हरदम

१. तुम में लागा मनवा हरदम, तुम ही साजन मेरे ।
तुमरे बिन सूझत न कुछ भी जीवन अर्पण तेरे ॥
२. परखा तोला, जग है सारा, अपना मिला न कोई ।
एक तुम्हीं हो मेरे प्रभुजी, आई द्वारे तेरे ।।
३. आओ तुम बिन सेज है सूनी, मुझको गले लगा लो ।
मिलन तेरे को तड़पे हिरदय, दयावन्त प्रभु मेरे ॥
४. मैं भोली अबला नारी हूं, ज्ञान भजन क्या जानूं ।
कृपा तेरी ही एक सहारा, देखे दर बहुतेरे ॥
५. तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, चरण पड़ी हूं स्वामी ।
बांह गहो मैं हूं दुख्यारी, काटो पाप घनेरे ॥

(१४६) करत व्यवहार जगत के

१. करत व्यवहार जगत के माही, मन तुम में ही रहता।
सुख दुख सब ही सहन करत हूं टिका वहीं पर रहता ॥
२.जैसे नदियां सागर में, सब भर न उसे वह पाती।
वैसे मनवा थिर है रहता, चंचल न हो पाता ॥
३. ऐसा मन हो जिस साधक का, वह ही राम को पाता।
नहीं जगत में लागा रहता, सुखी दुखी बन जाता ॥
४.बिन वैराग है सम्भव नाही, मन ऐसा बन पाए।
रहकर के भी जग के माही, जग से दूर हो जाता ॥
५.सद्गुरु देव कृपा बिन नाही, मन वैराग है पाता।
तभी बने थिर ऐसा हरदम, चंचलता न पाता ॥
६. तीर्थ शिवोम् कृपा हे सद्गुरु, मैं हूं दास तुम्हारा ।
चरण शरण में राखो मोहे, जग में दुख बरसाता ॥

(१४७) जीवन का क्या भरोसा

१. जीवन का क्या भरोसा, सांस आए या न आए।
चलता तो है बटोही, पहुंच न पहुंच पाए ।।
२.बादर घिरे गगन में, बरसें कि या न बरसे।
पैदा तो होता बालक, बच पाये या न पाए ।।
३. ऐसा जगत बना है, माया का खेल सारा।
दीखे तो बहुत कुछ है, बन पाए, या न पाए ।।
४.पर जीव तो बना है, आसक्त चित इसमें।
भगवान ही यह जाने, कुछ कर सके, न पाए ।।
५. सुख दुख सभी वृथा हैं, बस राम ही अधारा ।
आशा में जीव लगा पाये, कि या न लगा पाए ।।
६. शिव ओम् ले समझ तू, पल भर का न भरोसा ।
इक दिन भी और तुझको, मिल पाए या न पाए।।

(१४८) वन पर्वत के दृश्य मनोहर

१.वन पर्वत के दृश्य मनोहर, सुन्दरता अति भारी ।
सागर नदियां और जलाशय, छाई बदरियां कारी ।।
२. देख देख सुख पाता मनवा, कहे प्रभु प्रभुताई ।
पर यह भी सब खेल है माया, मन भरमावन हारी ।।
३. माया करतब करे अनोखे, रूप कुरूप बनावे ।
कहीं फैलावे सुन्दरता को, मन मोहक अति भारी ।।
४. जीव फंसा माया के माही, कर हंकार प्रकाशित ।
माया में माया फैलावे, बन भयंकर कारी ॥
५.नगर विमान बाजार बनावे, महल जो ऊंचे-ऊंचे ।
माया में तब माया मिलकर, करत उपद्रव भारी ।।
६. तीर्थ शिवोम् बचाओ प्रभुजी, माया में भरमाया ।
जानूं क्या मैं माया तुमरी, होत दुखी हूं भारी ।।

(१४९) राम जी !

१.राम जी ! क्यों तुम छोड़ गये ।
सूनी करत अयोध्या सारी, वन में जाए गए ।।
२. रोवत तड़पत नगरी तुम बिन, तुम को तरस न आए।
काय करे, कुछ सूझत नाही, तुम क्यों दूर गए ।।
३. चौदह वर्ष की लम्बी अवधि, तुम बिन कैसे बीते ।
हर पल जैसे रात अंधेरी, जब से तुमी गए ।।
४. न मन लागे कुछ करने को, तुमरी याद सताए ।
हिरदय में इक टीस उठे है, काहे तुमी गए ।।
५. भूल भई का हम सो भारी, हम को दण्ड जो दीना ।
कुछ तो बात तुम्हारे मन में, जो तुम छोड़ गए ।।
६. तीर्थ शिवोम सुनो हे रामा, निपट तुमी निर्मोही ।
हम तो तड़पे तुमरे कारण मुँह तुम मोड़ गए ।।

(१५०) वासना !

१.वासना ! तू मरती क्यों नाहीं ।
क्यों भरमाया जग सारा ही, बैठ रही मन माही ॥
२. अजब लगाया बाग है मन में, जीव रहा सुख माने।
पर तू बनती दुख का कारण, डरत किसी सो नाही ॥

३.आए और ललचाए मनवा, फिर-फिर तुम्हें बुलाए।

तू आए तो करे उपद्रव, खेल करे मन माहीं ॥

४. जपी, तपस्वी, ज्ञानी, ध्यानी, तुम सो सब ही हारे ।
पर तू ऐसी तन के बैठी, बस में आवत नाहीं ॥

५.रहा उपाय सूझत नाही. काय करें हम माही ।

न तू मरती, न तू भगती, चंचलता मन माही ॥

६. तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभु, क्या यह कौतुक कीना ।

रही सताए, रही नचाए, पर यह मरत है नाही ।।

(१५१) जाने का मौसम आ गया

१. जाने का मौसम आ गया, चलने की तैयारी करो ।

अपने पराए छोड़कर, चलने की तैयारी करो ॥

२. खा लिया जो था कि खाना, जो लिखा किस्मत में था ।

अब मिलेगा और न, चलने की तैयारी करो ॥

३.अब तक रहा उलझा जगत, भोगते भोगों को तू ।

अब तो वेला आ गई, चलने की तैयारी करो ॥

४. दी गवाँ यूं ही उमर, सपने जगत के देखते।
आगे का कुछ सोचा नहीं, चलने की तैयारी करो ।।
अब सिमरले राम को, जो कुछ भी तेरी शेष है।
जपते ही जपते राम को, चलने की तैयारी करो ।।
६. शिव ओम् है यह कीमती, जीवन जो तुझको है मिला।
जाए कहीं बेकार न, चलने की तैयारी करो ।।

(१५२) दिखाया प्रभु ने यह कैसा नज़ारा

१. दिखाया प्रभु ने यह कैसा नज़ारा,
जगत को बना मोह लिया मन हमारा।
बनाया है चंचल बड़ा बेसहारा.
मिला पर न कोई भी हमको किनारा ॥

२.प्रभु ने यह माया है कैसी रचाई,
नहीं छूटता है करे कुछ कमाई ।
कि दुख में ही बीते हैं जीवन लम्बाई,
न ही पार पाता न पकड़े किनारा ॥

३. है झूटे नज़ारे ये दुनियाँ के सारे,
मगर मन को लगते बड़े ही प्यारे ।
न छोड़े कोई, लेत इन को संभारे,
रहे पकड़े वह है इधर का किनारा ॥

४. यदि कोई चाहे जो छोड़न यह माया,
तो होती है बंधक अजब यह है माया ।
सुखों के लिए कोई हर एक धाया,
न छोड़े किनारा न पाए किनारा ॥

५.रहे जीव भटका फिरे हैं जहाँ में,
कि दर-दर का मारा है लटका जहाँ में।
नहीं मिलता सुख है यहाँ आ जहाँ में,
रहा दुख वह है पाता, न पाए किनारा ॥

६. कि साधन के लिए वह तो आया था जग में,
कि शिवओम फँसा वह आकर के जग में।
न साधन किया न कमाया ही जग में,
रहा उलझता, न कि पास किनारा ।।

(१५३) तन मन सब ही सूख गयो है

१.तन मन सब ही सूख गया है, कवहूं मिलोगे आए।
राह देखत पथराई अक्खियां, आंसू ठहर न पाए ।।
२. रहते हर पल मन में तुम ही, दूजे कहीं न जाए।
आकुल व्याकुल मनवा मेरा, या में ही रम पाए ।
३.वर्षा आए शिषिर ग्रीष्म ऋतु, तड़प हृदय न जाए।
पीड़ा उठे निरन्तर अन्तर, तुमरा ध्यान सताए ।।
४.मन मनवाला प्रेम तेरे का, जगत विषय न भाए ।
काय करूँ सुध-बुध सब खोई, विरह अगन जलाए ।
५.आन मिलो हे मेरे सजना, न कोई धीर वंधाए ।
एक तुम्ही जा कहूँ आपना, दूजा नज़र न आए ।।
६. तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मेरे, नदिया पार कराए।
तुम बिन और न दीखे कोई मन की पीर मिटाए ।।

(१५४) छोड़े मुझे भव सागर माहीं

१. छोड़े मुझे भव सागर माहीं, प्रियतम कहाँ गए तुम ।
गोते खात रही जल अन्दर, अन्तर्धान भए तुम ।।
२. रही पुकारत तोहे हर पल, आओ मुझे बचाओ ।
तुम तो सुनत न सैयां मोरे, रुठे, कहाँ गए तुम ।।
३. गहरी नदिया दूर किनारा, माझी कोई न दीखे ।
कैसे उतरूं पार में साजन, सुध न लेत रहे तुम ॥
४.मैं रोऊं चिल्लाऊं तुम बिन, हर दम तुम्हें बुलाऊँ ।
गहरे उतरत जात हूँ जल में, पार करो आय तुम ।।
५.तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, दुखिया अबला नारी ।
आओ पार लंघाओ मुझको, समरथ एक भए तुम ॥